बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाज़ी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके
बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-65 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | जून, 2017 | मूल्य - 5 रूपए

भीख नहीं भविष्य दो

बच्चों और परिवारों ने दिए सुझाव

रिपोर्टर शम्भू और ज्योति

आजकल दिल्ली जैसे शहरों में लालबत्ती मंदिरो मस्जिदो में भीख मांगने वाले बच्चों की संख्या तेजी से बढ़ रही है जो एक चिंता का विषय है इसी विषय पर बालकनामा की टीम ने जाएजा लिया और लोगो और बच्चो से जानने की कोशिश की कि वह क्या चाहते हैं। पत्रकारों ने बात की कि वह आखिर भीख क्यो मांगते है और इस कार्य में बच्चों की इतनी बढ़ोतरी क्यों है? इसका क्या कराण है? तथा बच्चो से इस मुद्दे को लेकर उनसे सुझाव भी मांगे की सरकार व अन्य कार्यकारी लोग बच्चो के पुर्नवास करने के लिए क्या करे? इस समस्या कैसे निपटा जाए? ताकि बच्चों को भीख मांगने से आजादी मिल सके और भीख मांगने वाले बच्चो को शिक्षा से जोड़कर उनका बेहतर विकास किया जा सके। पत्रकारो ने सड़क, मंदिरों, लालबत्ती पर भीख मांग रहे बच्चो से जा जाकर बातचीत की और उनका दर्द व मजबूरी जानने की कोशिश की। कि इतने छोटे छोटे बच्चे आखिर भीख क्यों मांगते हैं? और उन बच्चो से कुछ उपाय भी मांगे कि इस गंभीर विषय से कैसे निपटा जा सकता है। इसी मुद्दे को लेकर पत्रकार ने 13 वर्षीय परिवर्तित नाम कन्हैया- जो लोधी रोड की लालबत्ती पर भीख मांगता है ने बताया मैं अपने माता.पिता के दुर्व्यव्यहार की वजह अपने घर से भागकर आ गया था। मैं यहां अपना पेट पालने के लिए भीख मांगता हूं। अगर कोई मेरे माता पिता को उस वक्त समझाता तो मुझे यहां लालबत्ती पर भीख नहीं मांगना पड़ता। क्या कोई मेरे माता पिता से बातचीत करके मेरी सही देखरेख का जिम्मा उठा सकता है?

14 वर्षीय परिवर्तित नाम राधा ने बताया कि मैं ओखला पुल के नीचे अकेली रहती हूं। मंदिर और ओखला मंडी में भीख मांगकर अपना पेट भरती हुं क्योंकि मेरा यहां कोई नही है जो मेरा पेट भर सके। लेकिन मेरी यह दशा देखते हुए एक साल पहले मुझे एनजीओ के कार्यकर्ता के सहयोग से शेल्टर होम पंहुचा दिया गया था। मैं वहां चार महिने तक रही लेकिन शेल्टर होम के कार्यकर्ता के दुर्व्यव्यहार की वजह से मैं शेल्टर होम से भागकर सड़क पर फिर से आ गई और अपना पेट पालने के लिए मैं भीख मांगने लगी। अगर हम बच्चों के लिए शेल्टर की सुविधाए सही रूप से सीधे बच्चो को मिल जाए तो कोई भी अकेला व अनाथ बच्चा शेल्टर होम से भागकर सड़क र नहीं आएगा और उसे भीख नहीं मांगनी पडेगी। क्या ऐसा हो सकता है कि शेल्टर होम के कार्यकर्ता बच्चो से अपशब्द न बोले और उनसे विनम्रता से पेशा आए? ऐसा करने से बहुत बच्चो के जीवन में बदलाव आ सकता है वह भीख मांगने के गिरोह में वापस नही जाएंगे।

14 वर्षीय (परिवर्तित नाम) गोपाल ने बताया कि मेरे 3 भाई बहन है जो मुझसे छोटे हैं मेरी मां बुजुर्ग है मेरे पिता जी की मृत्यू आज से 2 साल पहले हो गई थी जिस वजह से मुझे भीख मांगना पड़ा क्योंकि मुझे सारा घर का कामकाज करना पड़ता है तथा घर का खर्चा चलाने के लिए मैं जगह जगह जाकर भीख मांगकर कुछ पैसे जुटाता हुं जिससे मेरे घर का पालन पोषण होता है। अगर कोई मां की विधवा पेंसन बनवा दे तो मुझे भीख नहीं मांगना पडेगा। क्या कोई मेरी मदद कर सकता है ?

14 वर्षीय (परिवर्तित नाम) साहिदा ने बताया कि हम बच्चे भीख इसलिए मांगते है कि हमारे माता पिता काम करने के लिए नही जाते है इसी मजबूरी में बच्चो को भीख मांगना पड़ता है क्या सरकार हमारे पिता को मजदूरी दे सकती है। जिससे हमें भीख मांगने न जाना पड़े।

बालकनामा के रिपोर्टर और अन्य साथियों का सम्मान करती हुई लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन

13 वर्षीय (परिवर्तित नाम) आशा ने बताया कि भीख मांगना बच्चो के लिए एक चिंता का विषय बनता जा रहा है और भीख मांगना बच्चो की मजबूरी बनती जा रही है क्योंकि जिन जुग्गी झोपड़ियों में बच्चे रहते हैं वहां पर कुछ पुलिस अधिकारी बच्चों के मात पिता से पैसे मांगते है हमारे माता पिता तो कुछ के माता पिता कामकाज करते हैं और कुछ के नहीं पर वह अपने गुजारे लायक ही हर दिन पैसे कमा पाते हैं तो फिर पुलिस अधिकारी को हम कहां से पैसा देंगे अगर हम उन्हें पैसे नही देते है तो वह हमारी जुग्गी तोड़ देते है इसलिए हम बच्चे भीख मांगकर पुलिस को देने के लिए पैसे जमा करते हैं ताकि जब पुलिस वाले भईया हमारे माता पिता से पैसे मांगे तो वह भीख से मांगा हुआ जमा किया हुआ पैसा पुलिस को दे दें। जिससे वह हमारी बनी जुग्गी को नहीं तोड़ सके। क्या सरकार हम बच्चो के पुर्नवास के लिए एक स्थानीय जगह दे सकती है? जहां बच्चों को पुलिस को देने के लिए भीख मांगकर पैसे न जुटाने पड़े। राकेश ने बताया कि अगर बच्चो को भीख के विषय से आजादी दिलाना चाहते हैं तो हमारी जरूरतो को पूरा करना होगा तभी हम बच्चे भीख मांगना बंद

शेष पृष्ठ 2 पर

भिक्षावृत्ति रोकने के लिए बालकनामा का सुझाव

- हर जगह में पहले तो ऐसे बच्चो और परिवारो की गिनती करें ताकि इनकी स्थिती का आंदाजा हो सके ।
- जो यह बच्चे हैं और इनके परिवारो से लगातार सम्पर्क बनाया जाए ताकि इनकी की परेशानियों का पता चल सके।
- किसी भी बड़े शहर में ऐसे भीख मांगने वाले जो भी व्यक्ति होते है या बच्चो होते हैं उनके लिए कोई न कोई कार्यक्रम जरूर हो ।
- सरकार हम बच्चों के माता.पिता को कुछ ऐसा छोटा मोटा कामकाज दिला दे जैसे पन्नी पैक करने वाला काम, कागज के लिफाफे बनाने वाला काम, घरों में बड़े- बुजुर्गों की सेवा करने का काम एघरेलू कामकाज एछोटी फैक्टरियों में रूई साफ करने का काम और कपड़ो की पैकिंग का काम दिला दे । ऐसा करने से हमारे माता पिता के पास अच्छा रोजगार होगा वह हमें भीख मांगने नहीं भेजेंगे और बच्चो को भीख मांगने से आजादी मिल जाएगी ।
- हमें यह मानना पड़ेगा कि भीख मांगने वाले बच्चो की समस्या है तभी हम उन बच्चो से सीधा समपर्क कर सकेंगे ।
- सरकार को चाहिए की कोई एक नम्बर जहां मजबूरी में भीख मांगने वाले बच्चे अपनी मजबूरी को बता सके। उदाहरण के लिए हर जगह यह पोस्टर लगवाए जाए कि यदि आप से कोई जबरदस्ती भीख मंगवा रहा है या अगर आप मजबूरी में भीख मांग रहे हैं तो इन नम्बरों पर फोन करें या इस नम्बर पर फोन करके हमें बताए। साथ ही साथ लोगो को जागरूक करने के लिए स्लोगन जैसे (भीख नहीं भविष्य दो) बनवाए जाए।
- स्कूल में पढ़ने वाले बच्चो के माध्यम से इस विषय पर जागरूकता फैलाई जाए ।
- ऐसे बच्चो के लिए खास स्कूल बनावाए जाए।
- बढ़ते कदम की राष्ट्रीय अध्यक्ष ज्योति ने सड़क एवं कामकाजी बच्चो के समक्ष अपनी मन की बातो में कहा कि मुझे बहुत खुशी हो रही है यह बताते हुए कि हमारे प्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारत देश को स्वच्छ रखने के लिए स्वच्छता भारत अभियान की पहल की और इस पहल से हमारे देश के वासी भारत को स्वच्छ करने मे जुटे है मुझे यह देख बेहद खुशी है कि लोगो ने इसका पालन किया है और मुझे यह भी यकीन है कि अगर हमारे प्रीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी अपने मन की बातों में सडक एवं कामकाजी बच्चो के समक्ष बात करे और यह कहे कि भारत में भीख मांगने वाले बच्चो का पुर्नवास किया जाए तथा हमारे देश से (भीख) जैसा गंभीर विषय जड़ से हटा दिया जाए । ऐसा करने से हमारे देश के नागरिक भीख मांगने वाले बच्चो की मदद करने हेतू मजबूर होंगे और अपनी जिम्मेदारी समझेंगे।

संपादकीय

प्रिय साथियों,

नमस्कार !

हमारे लिए यह प्रसन्नता की बात है कि स्ट्रीट चिल्ड्रन की समस्याओं को प्रमुखता से सामने लाने वाले आपके चहेते अखबार 'बालकनामा' की पहुंच अब कामकाजी बच्चों के बारे में निर्णय करने वाले लोगों तक पहुंच रही है। देश-विदेश का मीडिया आपके काम की सराहना कर रहा है। अभी हाल ही में 'बालकनामा' के रिपोर्टरों को लोकसभा की अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन ने एक कार्यक्रम में सम्मानित किया है, सचमुच हमारे लिए यह गौरव की बात है। हमारा प्रयास होता है कि हम स्ट्रीट चिल्ड्रन की चिंताओं और समस्याओं को समाज के जिम्मेदार नागरिकों के सामने लाएं ताकि उसकी समस्याओं का समाधान हो सके। 'बालकनामा' स्ट्रीट चिल्ड्रन के संघर्ष और कष्टदायक जीवन को समाज के सामने लाने का माध्यम बन गया है। हम समाज के समर्थ सज्जनों से अपील करते हैं कि अभावग्रस्त स्ट्रीट चिल्ड्रन की बुनियादी समस्याओं को संवेदनशीलता के साथ महसूस करें और समस्याओं के निदान के लिए यथासंभव अपना सहयोग दें। 'बालकनामा' के पन्नों पर बिखरी खबरें हम स्ट्रीट चिल्ड्रन की समस्याओं की सच्ची गवाही देती हैं।

आशा करते हैं कि आपको इस बार का अंक पसंद आएगा आपकी प्रतिक्रियाएं ऊपर लिखे पते पर आवश्यक भेजने का कष्ट करे।

संपादकीय टीम

मजबूरी ने बनाया किन्नर

बालकनामा ब्यूरो

बदरपुर बोर्डर की कुछ लड़कियां भूतकाल में भीख मांगने का काम करती थीं लेकिन भीख मांगने में कम पैसे मिलने की वजह से इन लड़कियों ने काफी मेहनत की। जैसे कि बाजार में भीख मांगना, शनिवार को घर-घर में जाकर और रेलगाड़ी आदि में। इतनी मेहनत करने के बाद भी उतना पैसा नहीं मिल पाता था, जिससे इन लड़कियों के परिवार का गुजारा हो सके। इन लड़कियों ने देखा कि रेलगाड़ी के अंदर कुछ लोग किन्नर बनकर भीख मांग रहे हैं और उन्हें लोग दस बीस रूपये देने के बजाए सौ-पचास रूपये दे रहे हैं, जो हम पूरे दिन कड़ी मेहनत करके भी नहीं कमा पाते हैं और दिनभर भीख मांगने पर भी सौ-पचास रूपये तक भी नहीं हो पाते थे। किन्नरों को तो लोग सौ-पचास रूपये ऐसे ही दे देते हैं। यह देखकर उसी समय इन लड़कियों ने निर्णय लिया कि अब से वे भी इसी तरह किन्नर बनकर भीख मांगेंगीं, तो इनकी ज्यादा कमाई हो पाएगी, और इनके घरों का खर्चा भी ठीक से चल सकेगा। उसके दूसरे ही दिन से इन सभी लड़कियों ने

किन्नर बनकर भीख मांगने का काम शुरू कर दिया।

वर्तमान में पता चला है कि जो लड़कियां किन्नर बनकर भीख मांग रही थीं, उन्हें उसका बहुत बुरा परिणाम भुगतना पड़ रहा था। 17 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राधिका ने बताया कि जब हम रेलगाड़ी में किन्नर बनकर भीख मांगने के लिए जाते हैं, तो लोग हमें अश्लील नजरों से देखते है और गंदी-गंदी बातें बोलते रहते है कि चल रही है, मेरे साथ ? अगर तू मेरे साथ चलेगी तो मैं सौ रूपये के बदले पांच सौ रूपये दूंगा। पर मेरे साथ चलना होगा। कभी-कभी तो लोग हमसे बात करते-करते ही हमारे गुप्त अंगो को भी टूने लगते हैं। राधिका ने बताया कि जब हमारे साथ यह सब हो रहा होता है, तो बहुत दुख होता है कि हम पैसे कमाने के लिए किन्नर बनकर आते हैं और लड़के सबके सामने हमारे साथ बदसलूकी करते हैं लेकिन किन्नरों के साथ तो वह ऐसा नहीं करते। वह सिर्फ हमारे साथ ही इस तरह से पेश आते हैं। हम लड़कियों के साथ लोग ऐसा व्यवहार क्यों कर रहे हैं ? हमारी मजबूरी का लोग गलत फायदा क्यों उठा रहे हैं ? 16 वर्षीय बालिका ने बताया कि अगर हम लड़कियां कोठियों में भी काम करने के लिए जाती हैं, तो वहां भी हमारे साथ अश्लील तरीके से बातें की जाती हैं। क्या हम लड़कियों को इस समाज में जीने का कोई हक नही है ? अगर है तो इस तरह का व्यवहार क्यों ? हमारी मजबूरी है इसलिए हम लड़कियां किन्नर बनकर भीख मांगती हैं। इस मजबूरी की कीमत क्या हमें अपने जिस्म से चुकानी पड़ेगी ?

स्टेशनों पर असुरक्षित हैं कामकाजी बालिकाएं

बालकनामा ब्यूरो

स्टेशन एक विशेष गढ़ बनता जा रहा है सड़क एवं कामकाजी बच्चों का। ज्यादातर बच्चे अपने घरों से भागकर सबसे पहले स्टेशनों या सड़क के बस स्टॉप पर आ जाते हैं और अपना कामकाज वहीं रहकर शुरू कर देते हैं। इन बच्चों में लड़के और लड़कियों की संख्या लगभग सामान्य देखी गई है। पत्रकार जब ऐसी लड़कियों से स्टेशनों पर मिला और उनसे बातचीत की तथा यह जानने की कोशिश की कि वह स्टेशनों पर आकर अपना जीवन कैसे बिताती हैं तथा उन्हें वहां रहकर क्या-क्या समस्याएं झेलनी होती हैं ? पत्रकार से स्टेशन पर रहने वाली लड़कियों ने अपना दुख-दर्द बताया कि वे किन-किन मजबूरियों में स्टेशन पर आती हैं और आने के बाद वह स्टेशन पर सुरक्षित नहीं रह पाती हैं, क्योंकि स्टेशनों पर जो लड़के होते हैं, उनका बरताव स्टेशन पर रहने वाली लड़कियों के प्रति ठीक नहीं रहता है। मौका देखते ही वह उनके साथ अश्लील हरकतें करते हैं। चौंका देने वाली बात यह है कि आज तक ऐसी कोई भी लड़की नहीं है, जिसे इन लड़कों ने बख्शा हो। यह लडके स्टेशन पर ही पूरे दिन कामकाज व नशा करते हैं और जो भी नई लडकी घर से भागी हुई नजर आती है, वह उस लड़की को अपने जाल में फंसाते हैं और उनके साथ अश्लील हरकत करने को कहते हैं तथा उनके साथ यौन शौषण करते हैं। इस बारे में और जानकारी देते हुए पत्रकार से 17 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सोनम ने बताया कि जब वह दो साल पहले घर से भागकर स्टेशन पर आ गई थी, तो उसकी मुलाकात सबसे पहले एक लडके से हुई। उस लड़के ने सोनम से शुरूआत में बहुत अच्छे से बात की तथा उसे अपने बारे में बताया कि वह भी उसकी तरह ही घर से भागकर स्टेशन पर आया है; क्योंकि उसके माता-पिता उसे बहुत मारते-पीटते थे। यह सब बात सुनने के बाद सोनम को उस लड़के पर विश्वास हुआ और उससे दोस्ती कर ली। उसे लगा कि वह दोस्त बने रहकर उसकी मदद करने में उसका साथ देगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। वह लड़का सोनम को बहला-फुसला कर सफाई लाईन के पास ले गया, जिस जगह पर रेलगाड़ियों की सफाई की जाती है। उस जगह पर ले जाने के बाद उस लड़के ने सोनम को नशा करने को कहा, तो उसने नशा करने से मना कर दिया। उस वक्त तो उस लड़के ने सोनम से कुछ नहीं कहा, न ही उससे जबरदस्ती की; लेकिन जब सोनम रात को स्टेशन पर सो रही थी, तब वह लड़का उसके पास गया और उसका मुंह हाथ दबाकर उसके साथ अश्लील हरकत करने लगा। इसी तरह टेशनों पर रहने वाले लड़के; लड़कियों के साथ अश्लील हरकतें करते हैं और इन्हीं की वजह से कोई भी लड़की स्टेशनों पर सुरक्षित नहीं रह पाती है। उनके साथ आए दिन यौन शौषण किया जाता है, जिसकी लोगों को भनक तक नहीं लगती। यहां बहुत सारी ऐसी लड़कियां है, जो इस अत्याचार के चलते स्टेशनों पर ही गर्भवती हो जाती हैं और उन्हें सलाह देने वाला कोई नहीं होता है। हमारी जानकारी में अब तक लगभग बीस लड़कियां यौन-शौषण का शिकार हो चुकी हैं।

भीख नहीं भविष्य दो

पृष्ठ 1 का शेष

कर सकते है।

15 वर्षीय (परिवर्तित नाम किशन) अपनी मजबूरी बताते हुए कहां कि हमारे परिवार में यह रिती रिवाज सदियों से चला आ रहा है मेरे दादा दादी भी भीख मांगते थे और हमारे माता.पिता भी बच्चों से भीख ही मागवा रहे है वह हमें पढ़ाई.लिखाई करवाने के बजाय हमे भीख मांगने के लिए भेजते है। क्या इस परंपरा को बदला जा सकता है ? सरकार को चाहिए की एक ऐसा अनोखा कार्यक्रम की यौजना व कल्पना करे जो सिर्फ ऐसे बेकार के पुराने रिजी रिवाजो का पालन करने वाले लोगो को समझाने का बीढा उठा सके। लोगों की सोच को बदलने का कार्य करे वह हमारे माता.पिता को यह एहसास दिलाए कि समय के अनुसार सब कुछ बदलता है और उन्हें यह समझाए कि वह अपने द्वारा बनाए पुरानी रिती रिजाव को का पालन करके अपने बच्चो का भविष्य केवल बर्बाद कर रहे हैं। ऐसा करने से भीख मांगने वाले बच्चो की संख्या कम हो सकेगी।

भीख मांगने वाले बच्चों के माता पिता का दर्द

● 25 वर्षीय श्रीकामनी देवीरू जी बिहार के बेतिया जिला की रहने वाली है ने बताया कि हमलोग बेजरोजगार है हम बिहार से दिल्ली आए हैं काम की तलास में लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि काम का कोई ठिकाना ही नही है । जिन ठेकेदारो ने हम लोगो को यह कहकर बुलाया था कि आप लोगो को दिल्ली में लेबर का काम दिलाऊंगा लेकिन जो ठेकेदार हमें बिहार से दिल्ली लेकर आया उसी ने हमें धोखा दे दिया और हमें दिल्ली छोड़कर भाग गया । ऐसे हालात में कुछ काम तो मिला नहीं बल्कि खाने के लाले पड़ गए इस वजह से हम और हमारे बच्चों ने भीख मांगना शुरू कर दिया । इसी तरह बहुत से परिवारों को बहला फुसलाकर काम के बहाने दिल्ली लाया जाता है और सड़को पर छोड़ दिया जाता है ऐसे में बच्चे भीख मांगने के काम करने लग जाते हैं। क्या सरकार इस तरह को लोगो की मदद कर सकती है उन्हें रोजगार दे सकती है ? जिससे हमारे बच्चो को भीख न मांगना पड़े।

● 26 वर्षीय कोमल देवी जीरू ने बताया कि हमारे पास कोई आडेंटी कार्ड नही है जिसकी बदौलत हम लोग कहीं काम की तलास कर सके। इसलिए हम अपने बच्चों को भीख मांगने के लिए भेजते है ।

● 32 वर्षीय परिवर्तित नाम रूपा जीरू ने अपने बारे में बताते हुए कहा कि मैं कानपूर के रहने वाली हूं वहां पर कुछ बदमासों ने मेरा घर तोड़ दिया इसलिए हम अपने बच्चों को दिल्ली लेकर आ गए और मैं खुद भी भीख मांगती हूं और अपने बच्चों से भी भीख मंगवाती हूं क्योंकि यह हमारी मजबूरी है अगर हमलोग भीख मांगने नही जाएंगे तो हमारा पेट कैसे पलेगा।

सौतेले पिता का बेटी पर बुरा साया

बालकनामा ब्यूरो

यह दर्दनाक खबर 17 वर्षीय (परिवर्तित नाम) खुशबू की है। खुशबू जब 12 साल की थी, तो इसके पिता रिक्शा चलाने का काम करते थे, मम्मी अपने घर में ही काम करती थी। बालिका उस समय अपने परिवार के साथ बहुत खुश थी अचानक कुछ महीने के बाद खुशबू के पिता के साथ दर्घटना हो गई, जिसकी वजह से उनकी जान चली गई। दो साल बहुत मुश्किल से गुजरे और जैसे ही खुशबू 15 साल की हुई, तो उसकी माता ने दूसरी शादी कर ली। उसके बाद तो मानो जैसे खुशबू पर मुसीबत ही आ गई; क्योंकि उसके सौतेले पिता उसके साथ गलत व्यवहार से पेश आने लगे थे। खुशबू ने बताया कि जब वह रात को अपने कमरे में सोई हुई रहती थी, तो उसके सौतेले पिता उसके साथ अश्लील हरकत करते थे। यह हादसा उसके साथ काफी दिनों तक चलता रहा, फिर उसने एक रोज हिम्मत जुटाकर अपनी मम्मी से अपने सौतेले पिता के बारे में शिकायत की। लेकिन उसकी मम्मी ने भी खुशबू की मदद नहीं की। उसकी मम्मी भी उसके सौतेले पिता का साथ दे रही थी। खुशबू ने बताया कि जब वह खाना खाने के लिए जाती थी, तो उसकी मम्मी खाने में कुछ डाल देती थी, जिससे खुशबू को गहरी नींद आ जाती थी और उसके सौतेले पिता उसके साथ घिनौनी हकरत करते थे। लेकिन खुशबू को दर्द का एहशास उस वक्त बिल्कुल नहीं होता था, पर जब उसे होश आता था, तो सर में दर्द होता था और पूरे शरीर में थकावट महसूस होती थी। देखते ही देखते कुछ महीनों के बाद उसे उल्टी और चक्कर आने लगे। तभी उसे किसी आन्टी से पता चला कि खुशबू गर्भवती हो गई है। जब खुशबू को यह पता चला, तो वह सदमें में चली गई; क्योंकि सबकुछ बताने के बावजूद उसकी मम्मी ने भी उसकी मदद नहीं की। उल्टे उसे दलदल में झौंक दिया। इसलिए खुशबू घर छोड़कर स्टेशन पर आ गई और वहीं अपनी जिंदगी बिताने लगी। लेकिन दुख की बात यह है कि वह अपने घर से भागने के बाद भी सुरक्षित नहीं है; क्योंकि जब वह स्टेशन पर आई तो उसने जिन लोगों से अपने लिए मदद मांगी उन लोगों ने भी उसके साथ अश्लील हरकत करने की कोशिश की; फिर वह स्टेशन पर कुछ नशा करने वाली लड़कियों के साथ रहने लगी और उनसे अपनी समस्या के बारे में बताया कि वह गर्भवती है। ऐसे में वह क्या करे ? उन लड़कियों ने खुशबू को कुछ दवाईयां लाकर दीं। उसके बाद उसकी समस्या हल हो गई। खुशबू अब इन्हीं लड़कियों के बीच रहकर अपना पेट पाल रही है।

घर में भी सुरक्षित नहीं हैं बेटियां

बालकनामा ब्यूरो

वेस्ट दिल्ली में रहने वाली 16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) काजल जब पत्रकार से मिली, तो उसने अपनी समस्या उनके सामने रखी। उसने बताया कि वह कैसे अपने परिवार के साथ रह रही है। दो साल पहले वह चौथी कक्षा में पढ़ाई करती थी लेकिन उसके पापा का देहांत होने के बाद उसकी पढ़ाई टूट गई; क्योंकि उसे अपने घर का कामकाज करना पड़ता था और उसकी मम्मी को घर का खर्चा चलाने के लिए कोठियों में काम करने जाना पड़ता था। कुछ महीनों तक ऐसे ही चलता रहा लेकिन उसके बाद काजल की मम्मी ने किसी दूसरे व्यक्ति से विवाह कर लिया। विवाह के बाद उसके सौतेले पापा अच्छे से काम करने के लिए जाते थे लेकिन अब काम पर नहीं जाते हैं। घर पर ही बैठे रहते हैं। अपने दोस्तों के साथ तांस खेलते रहते हैं। साथ ही दोस्तों के साथ दिन भर शराब भी पीते रहते हैं। वह जब भी घर आते हैं तो गाली-गलौज करते हैं। इस कारण काजल की मम्मी को फिर से काम करना पड़ा। उसकी मम्मी रोज कबाड़ा बीनने जाती है, जिससे दो पैसे घर में आते हैं। दुर्भाग्य की बात यह थी कि काजल के सौतेले पिता जब नशे में रहते थे, तो उनका व्यवहार अपनी सौतेली बेटी के प्रति ठीक नहीं रहता था; क्योंकि काजल के सौतेले पिता उसे गलत नजरों से देखते थे। कभी-कभी तो शरीर के गुप्त अंगो पर हाथ भी लगाते थे। इसी वजह से काजल अपने सौतेले पापा से हर वक्त डरकर रहती थी। काजल ने जब इस बारे में अपनी मम्मी को बताया, तो उसकी मम्मी ने उसका यकीन नहीं किया। तब काजल ने अपनी मम्मी को विश्वास दिलाने के लिए एक रात जब उसके सौतेले पिता अश्लील हरकत कर रहे थे तभी काजल ने रात को ही उठकर अपनी मम्मी को बताया कि मम्मी देखो पापा क्या हरकत कर रहे हैं। जब काजल की मम्मी ने अपनी आंखों से उसके पिता को यह अश्लील हरकत करते देखा, तब जाके विश्वास किया और उसकी मम्मी ने काजल के सौतेले पिता को उसी रात घर से निकाल दिया। अब काजल की मम्मी उसे अकेला नहीं छोड़ती। यहां तक कि जब वह काम पर जाती है, तो भी उसे अपने साथ लेकर जाती है।

रात भर कबाड़ा बीनने के बाद भी भूखे पेट सोते हैं बच्चे

बातूनी रिपोर्टर गुड्डी व रिपोर्टर विजय कुमार

लखनऊश्रम बिहार की झुग्गी झोपड़ी में रहने वाली लगभग 30 से 40 लड़कियां हैं, जिनकी उम्र 10 से 15 साल तक है। यह लड़कियां अपनी मम्मी के साथ रात 11 बजे से लेकर सुबह चार बजे तक कबाड़ा बीनने का काम करती हैं। 10 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सोना ने अपनी समस्या बताई कि अगर हम दिन में कबाड़ा बीनने जाते हैं, तो हमें बहुत लज्जा आती है और कुछ लड़के हमारे साथ बत्तमीजी करते हैं। डर के मारे हम अपनी समस्या किसी को नहीं बताते हैं और ना ही हम किसी से मदद लेते हैं। और चार बाग रेलवे स्टेशन पर दिन में रेलगाड़ियां भी बहुत कम आती हैं। सोना ने बताया कि अगर हम दिन में कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं, तो कोई फायदा नहीं होता है और सारा दिन बेकार चला जाता है; क्योंकि लखनऊके चार बाग रेलवे स्टेशन पर ज्यादातर गाड़ी रात को ही आती हैं, तब जाके रात में ज्यादा बोतलें मिलती हैं। 12 वर्षीय (परिवर्तित नाम) प्रियंका ने बताया कि कबाड़ा तो रात को ज्यादा मिल जाता है लेकिन जब हम लड़कियां रात को कबाड़ा बीनने के लिए स्टेशन पर जाती हैं, तो नींद पूरी नहीं हो पाती है, जिसके कारण स्टेशन पर कबाड़ा बीनते वक्त बहुत तेज नींद आती है। इस वजह से इनका स्वास्थय बिगड़ता जा रहा है। इसके अलावा इनके आस-पास जो बच्चे रहते है, वह भी इसी प्रकार अस्वस्थ होते जा रहे हैं; क्योंकि जब रात को कबाड़ा बीनकर ये घर लौटते हैं, तो कभी-कभी इन्हें एक वक्त का खाना भी नसीब नहीं होता और इन्हें भूखे पेट ही सोना पड़ता है; जिसकी वजह से हम बच्चे दिन पर दिन कमजोर होते जा रहे हैं। उनका शरीर सूखता जा रहा है, देखने में ऐसा महसूस होता है; जैसे वह कुपोषण जैसी बीमारी का शिकार हो रहे हैं, या उसकी चपेट में आ गए हैं। बालकनामा के पत्रकार को यह पता नहीं चल पाया है कि वाकई इन बच्चों को कोई बीमारी है भी या नहीं।

पानी की तलाश में बच्चे पी रहे हैं गंदा पानी

बालकनामा ब्यूरो

बाल्मीकी केंम्प में रहने वाले बच्चों की जनसंख्या सात सौ से आठ सौ तक है लेकिन दुख की बात यह है कि इन झुग्गियों में लगभग पांच-छह महीनों से पीने का पानी नहीं आ रहा है। इसलिए इन बच्चों को पांच किलोमीटर तक पैदल जाना पड़ता है। इन बच्चों की माताएं दूसरों के घरो में काम करने के लिए जाती हैं और इनके पिता लेबर का काम करने के लिए जाते हैं। लेकिन पीने का पानी भरने की जिम्मेदारी अपने बच्चों को देकर जाते हैं। 14 वर्षीय बालिका ने बताया कि भईया हम बच्चों को पीने का पानी भरने में बहुत तकलीफ होती है; क्योंकि हमारे आस-पास कहीं भी पानी नहीं मिलता है। इसी कारण हम बच्चे फैक्ट्रियों में भी पीने का पानी भरने जाते है, तो रास्ते में गाड़ियों से भी दुर्घटना होने का डर रहता है और फैक्ट्रियों में काम करने वाले लोग गलत नजर से देखते हैं। गंदे-गंदे शब्द बोलते हैं और पीने का पानी भी भरने नही देते हैं। डांटकर भगा देते हैं। इन परेशानियों से हम बच्चे रोज गुजरते हैं। लेकिन इस समस्या का हल हमारे मोहल्ले के प्रधान जी भी नहीं निकालते हैं। जब हम उन्हें समस्या बताते हैं, तो उनका कहना होता है कि पीने का पानी जल्द से जल्द लाया जाायेगा। एक दिन हम बच्चे पानी की तलाश में इधर-उधर भटक रहे थे। तभी अचानक रास्ते में गंदा नाला दिखाई दिया। उस गंदे नाले के अंदर से पीने के पानी का एक पाईप भी निकला हुआ था और उस पाईप में से थोड़ा पानी भी निकल रहा था। तभी हम बच्चों ने उस गंदे नाले में हाथ डालकर उस पाईप को हल्का खींचकर ऊपर किया। अभी हम बच्चे उसी पाईप में से पीने का पानी भरते हैं। पानी तो हमें किसी तरह मिल जाता है लेकिन कभी-कभी पानी भरते वक्त गंदे नाले का पानी पीने के पानी में मिक्स हो जाता है, हम बच्चो को मजबूरी में वही गंदा पानी भरना पड़ता है और उसी को पीना पड़ता है। उसी पानी से घर में खाना बनाया जाता है और नहाने-धोने का काम होता है। बच्चे चाहते हैं कि हमारी झुग्गियों में नल लगा दिया जाए। यदि नल नहीं लगवा पा रहे हैं तो जैसे दिल्ली सरकार लोगों के लिए दिल्ली जल बोर्ड की ओर से पीने का पानी टैंकरों से भेजती है, वैसे ही हमारी झुग्गियों में भी जल बोर्ड का पानी भेजा जाए, तो बच्चों को पानी के लिए इधर-उधर भटकना नहीं पड़ेगा। हमें भी स्वच्छ पानी मिल सकेगा।

पटरियों पर शौच करती हुई लड़कियों की बना रहे हैं अश्लील फिल्म

बालकनामा ब्यूरो

यह खबर आगरा के पृथ्वीनाथ आजम पाड़ा की है। वहां लगभग तीन सौ से चार सौ तक झुग्गी-झोपड़ी हैं लेकिन दुःख की बात यह है कि इन झुग्गियों में एक भी शौचालाय न होने के कारण बच्चे व उनके माता-पिता मजबूरी में रेलगाड़ी की पटरियों पर शौच करने के लिए जाते हैं। इसकी वजह से इन बच्चों को आये-दिन दुर्घटना होने का डर लगा रहता है। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सपना ने बताया कि हम लड़कियां पटरी पर शौच करने के लिए जातीं हैं, तो कुछ लड़के परेशान करते हैं। अश्लील बातें भी बोलते है। 17 वर्षीय (परिवर्तित नाम) रानी ने बताया कि जिस पटरी के पास हम लड़कियां शौच करने के लिए जाती हैं, वहां कुछ बड़े लड़के दीवार के पीटे टुपे रहते है और वह हम लड़कियों को देखकर अपने शरीर के विशेष अंगो (गुप्तांगों) पर हाथ लगाकर गलत हरकत करते रहते हैं। यह बात हमने अपने माता-पिता को भी बताई पर हमारे माता-पिता ने हम से बोला कि तुम्हें उससे क्या मतलब है। वह कुछ भी करें। बस अपना खयाल रखा करो। लेकिन हम लड़कियां जब भी शौच करने के लिए जाती हैं, तो बहुत डर लगता है कि कहीं हमारे साथ कोई लड़का गलत हरकत ना कर दे। एक दिन शाम को हम चार लड़कियां शौच कर रहीं थीं, तभी एक लड़का दीवार के पीटे से फिल्म बना रहा था। हमने उस लड़के से बोला कि आप फिल्म क्यों बना रहे हो, तो उसने गलत तरीके से बोला कि जान, देखने में बहुत मजा आता है। और हमारी ओर बढ़ने लगा तभी हम लड़कियां वहां से भाग निकलीं। दूसरी परेशानी यह है कि यहां पर रेलगाड़ी भी तेज रफ्तार से निकलती है। उससे भी आये-दिन दुर्घटना होने का डर रहता है। दो साल पहले एक बच्चे की यहीं पर रेलगाड़ी से टकरा कर दुघर्टना हो गयी थी, जिसके कारण उस बच्चे की मृत्यु हो गयी। यहां के सभी लोग चाहते हैं कि इस परेशानी से जल्द से जल्द टुटकारा मिले; क्योंकि हमारे प्रधानमंत्री स्वच्छ भारत अभियान चला रहे हैं और गरीब लोगों के लिए शौचालय भी बनवा रहे हैं, ताकि हमारा देश स्वच्छ हो सके। इसलिए हम बच्चे चाहते हैं कि हमारी झुग्गियों में भी शौचालय बनें, ताकि हम लड़कियों को इस प्रकार की परेशानियों से न गुजारना पड़े।

स्कूल की छुट्टियों में भी नहीं मिलता घूमने का अवसर

बातूनी रिपोर्टर मुस्कान व रिपोर्टर शम्भू

आप सभी जानते हैं कि जून के महीने में सभी सरकारी स्कूलों की टुट्टियां पड़ जाती हैं और इन छुट्टियों में बच्चे अपने नाना-नानी के घर तथा दूर-दूर मौज करने के लिए जाते हैं। खूब मस्ती करने के बाद वह अपने स्कूल से मिला होमवर्क भी पूरा करते हैं। आइए जानते हैं कि क्या वास्तव में इन स्कूल की टुट्टियों में बच्चे घूमने जाते हैं, या नहीं ? बालकनामा के पत्रकारों ने इसका जायजा लेते हुए 5 ऐसे बच्चों से मुलाकात कर बातचीत की, जो बिहार के रहने वाले हैं और स्कूल की टुट्टियों में दिल्ली आए हैं। लेकिन वह दिल्ली क्यों आए हैं ? जब इन बच्चों से बात की, तो 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राधा ने बताया कि वह बिहार के एक जिला बेतिया की रहने वाली है। वह बेतिया स्कूल में 5वीं कक्षा की छात्रा है। स्कूल की छुट्टियां पड़ जाने की वजह से उसके माता-पिता उसे दिल्ली लेकर आ गए हैं। लेकिन वह दिल्ली में घूमने के लिए नहीं आए हैं; बल्कि कुछ काम-काज करने के लिए आए हैं; ताकि वह दिल्ली से कुछ पैसे कमाकर अपने गांव ले जा सकें। वह भी अपने माता-पिता के साथ काम पर लग गई है। राधा दिल्ली में स्कूल की टुट्टियों में पानी बेचने का काम कर रही है। इसी प्रकार 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) कमला ने अपने बारे में बताया कि मैंने सोचा था कि इस बार स्कूल की टुट्टियों में हम बहुत मजे करेंगे और अलग-अलग जगहों पर घूमने के लिए भी जाएंगे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उसके माता-पिता ने कहा कि इन 45 दिनों की टुट्टियों में क्यों न वह अपने बच्चों को दिल्ली व मुम्बई जैसी भीड़-भाड़ वाले शहरों में ले जाएं; ताकि वहां जाकर खीरा और भुट्टे की दुकान लगा कर कुछ पैसा कमा सकें। कमला के माता-पिता दिल्ली में खीरे बेचने का काम कर रहे हैं और कमला को उसके माता-पिता ने पानी बेचने के काम पर लगवा दिया है।

वह दिल्ली के मेट्रो स्टेशनों और पार्कों में जा-जाकर पानी बेचने का काम कर रही है। कमला ने बताया कि स्कूलों की टुट्टियां पड़ने के बाद हर बार ज्यादातर बच्चों के माता-पिता उन्हें दिल्ली लेकर आते हैं और अपने बच्चों को छोटे-मोटे काम पर लगा देते हैं। छोटे बच्चों को पानी और खीरे बेचने का काम दिल्ली में आसानी से मिल जाता है। इसलिए छोटे बच्चे ज्यादातर पानी बेचने का काम करते हैं और पार्क, मेट्रो स्टेशन, बस अड्डा आदि जगहों पर पानी बेचने के लिए जाते है। इन बच्चों को पानी बेचने में ज्यादा दिक्कत पार्कों में होती है; क्योंकि पार्कों में युगल लोग बैठे रहते हैं। बच्चे उन्हें पानी लेने के लिए बोलते हैं, तो वह गुस्से से गाली देने लगते है। उनका व्यवहार बच्चों के प्रति बिल्कुल ठीक नहीं रहता है। जब यह बच्चे पूरे दिन काम करने के बाद रात को घर लौटते हैं, तो घर पर जाकर अपना स्कूल से मिला होमवर्क भी करते हैं। अक्सर स्कूल की छुट्टियों में बच्चे घूमने-फिरने जाते हैं और खूब मस्ती करते हैं। अलग-अलग कार्यक्रमों का लुत्फ उठाते हैं लेकिन यह बच्चे इन टुट्टियों में अपने माता-पिता के साथ दिल्ली तो आए लेकिन घूमने के लिए नहीं; बल्कि दिल्ली में आकर इनके माता-पिता ने इन्हें पानी और खीरे बेचने के काम पर लगवा दिया और यह बच्चे पानी और खीरे बेचकर दो पैसे कमाने में जुट गए।

आग की आंच में तप रहा बचपन

बालकनामा ब्यूरो

दिल्ली के कई स्थानों पर लगभग 14 से 16 साल के बच्चे भुट्टा भूनने का काम करते हैं लेकिन इन बच्चों को भुट्टा भूनते समय क्या-क्या समस्याएं उत्पन्न होती हैं। यह जानने के लिए पत्रकार ने इन भुट्टा भूनने वाले बच्चों से जाकर बातचीत की। बातचीत के दौरान बच्चों ने बताया कि उनके परिवार बहुत गरीब हैं। उनके माता-पिता भी काम करते है लेकिन फिर भी हमारा गुजारा नहीं हो पाता है; क्योंकि जो उनके माता-पिता काम करते हैं, उसमें उन्हें बहुत कम आमदनी मिलती है। इसलिए बच्चे भुट्टा भूनने का काम करते हैं। अपने परिवार के सदस्यों के साथ भुट्टा खरीदने के लिए मंडी भी जाते हैं। और शाम चार बजे से लेकर रात को दस बजे तक भुट्टा भूनने और बेचने का काम करते हैं। 15 वर्षीय कैलाश ने बताया कि भइया जब हम भुट्टा भूनते हैं, तो परेशानी होती है। कोयले की आंच हमारे हाथ पर पड़ती है, उसकी तेज तपन से कभी-कभी हाथ भी जल जाते है। इसके बावजूद कोयले की आंच बढ़ाने के लिए हाथों से भुट्टा भूनते समय पंखा चलाना पड़ता है; ताकि तेज आंच पर भुट्टा अच्छी तरह सिक जाए। जब इन बच्चों के आराम का समय होता है, उस समय इन्हें दर्द के मारे चैन नहीं मिलता। हाथ पैरों में बहुत दर्द और चुभन महसूस होती है। कैलाश ने अपना दर्द बताते हुए कहा कि अब तो मई के महीने में बहुत गर्मी पड़ रही है और इस गर्मी में हम आंच के पास रहते हैं। जब भुट्टा भूनते है तब पसीने से हम तरबतर हो जाते हैं। इस कारण हमारे शरीर में दाने भी हो जाते हैं, जिनमें बहुत खुजली व जलन होती है।

बच्चों ने बताई स्कूल की दशा

बालकनामा ब्यूरो

यह खबर आगरा के मारवाड़ी इंद्रानगर की है जहां सरकारी स्कूलों में बच्चों के साथ भेदभाव किया जाता है। यह बात हम सभी जानते हैं कि सरकारी स्कूल हर एक धर्म के बच्चे के लिए मान्य हैं। इसके बावजूद आगरा के सरकारी स्कूल में बच्चों को उनकी नीची जाति का अनुभव कराया जाता है। इस स्कूल के अध्यापक बच्चों के साथ जात-पांत का भेदभाव करते है। बहुत गंभीर बात है कि अगर स्कूल के अध्यापक ही बच्चों के साथ भेद-भाव करेंगे, तो हम बच्चों को और उनके माता-पिता को क्या सही शिक्षा दे पाएंगे ? कुछ छात्रों ने बताया कि जो बच्चे ऊंची जाति के होते हैं, उन बच्चों से तो अध्यापक बहुत स्नेह से बात करते हैं, दूसरी ओर नीची जाति के बच्चों से अध्यापक ठीक से बात भी नहीं करते हैं और उनसे काम करवाते हैं। ऐसा ही व्यवहार देखा स्कूल की कर्मचारी का भी; जो बच्चों के लिए खाना बनाती है, वह भी इन बच्चों के साथ भेद-भाव करती है; जैसे ऊंची जाति वाले बच्चों को स्कूल की प्लेट में ही खाना देती है और नीची जाति वाले बच्चों को स्कूल की प्लेट में खाना नहीं देती; बल्कि उनसे घर से प्लेट लाने के लिए कहती है और उनकी प्लेट में ही उन्हें खाना खाने के लिए देती है और वह ऊंची जाति वाले बच्चों के झूठे बर्तन भी उन से ही धुलवाती है। इस वजह से बच्चे पढ़ाई नहीं करते हैं। बच्चों के मन में यह डर बैठा हुआ है कि अगर

वह काम नहीं करेंगे, तो हमारी स्कूल की अध्यापिका हम बच्चों को स्कूल से बाहर निकाल देगी और हमें कक्षा में नही बैठने देगी। इस डर की वजह से कोई भी बच्चा इस बारे में किसी से भी शिकायत नहीं करता। यह देखकर ऊंची जाति वाले बच्चे हम बच्चों का मजाक उड़ाते हैं और हमें परेशान करते हैं। हम बच्चों से अपना काम करवाते हैं। अध्यापिका बच्चों से स्कूल में झाड़ू लगवाती है। इसके अलावा स्कूली समस्याएं कुछ इस प्रकार हैं, जैसे कक्षाओं में पंखे व लाइट बहुत कम चलती हैं और पीने के पानी की सुविधा भी स्कूल में मौजूद नहीं है। जब बच्चों को प्यास लगती है, तो बच्चों को स्कूल से बहुत दूर जाकर पीने के लिए पानी भरना पड़ता है। बच्चे जहां पानी भरने जाते हैं, वहां बंदरो का समूह भी होता है। इन बंदरों के काटने से कई बार बच्चे जख्मी भी हुए हैं।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

भीख मांगने को मजबूर बच्चे

बातूनी रिपोर्टर समीर, रिपोर्टर शम्भू

जिन बच्चों को पहले गुब्बारे व खिलौने बेचते हुए देखते थे, वही बच्चे वर्तमान में भीख मांग रहे है। इस विषय को लेकर पत्रकार ने भीख मांगने वाले बच्चों के साथ बैठक की। बैठक के दौरान इन बच्चों से सवाल जबाव किए गए कि आप बच्चे भीख क्यों मांग रहे हो? 12 वर्षीय (परिवतिर्त नाम) सपना ने बताया कि हम बच्चे बाजार में गुब्बारे बेचते थे लेकिन जून के महीने में बहुत तेज धूप पड़ रही है और इस तेज धूप में हमारे बहुत गुब्बारे फूट जाते थे। जिससे हमारा बहुत नुकसान होता था। इसलिए हमारे माता-पिता ने निर्णय लिया कि अब हम गुब्बारे बेचने का काम नही करेंगे; क्योंकि गुब्बारे फूटने की वजह से नुकसान तो हो ही रहा था और कुछ कमाई भी नहीं होती थी। तो हमारे माता-पिता ने हमें भीख मांगकर पैसे कमाने को कहा, इसलिए हमने गुब्बारे बेचने का काम छोड़कर भीख मांगना शुरू कर दिया है। हमारे माता-पिता भी हमारी तरह भीख मांगते है। जब से हमने भीख मांगना शुरू किया है, तब से हमारी ज्यादा कमाई होने लगी है। हम सुबह आठ बजे से लेकर रात को दस बजे तक भीख मांगते है। छोटे-छोटे भाई बहन बाजार, बसों और रेड लाईटों पर भीख मांगने के लिए जाते हैं और हमारे माता-पिता केवल शाम को मस्जिद और मंदिरों पर भीख मांगने जाते है। बच्चे तो पूरे दिन मांगने का काम करते हैं लेकिन उनके माता-पिता एक दो घंटे ही मांगने के लिए जाते हैं। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) रेखा ने बताया कि हम पूरे दिन कड़ी मेहनत करके लोगों से पैसे मांगकर लाते हैं। उसके बाद भी हमारे माता-पिता खुशी से पैसे नहीं लेते है। वह अपने बच्चों से कहते हैं और पैसे मांगकर लाओ। पैसों के लालच में बच्चों के माता-पिता गुस्से से बात करते है और जब भी बात करते हैं, सिर्फ पैसे कमाने के लिए ही बोलते है।

आज भी होते हैं बाल विवाह

बालकनामा ब्यूरो

14 साल से 17 साल तक के बच्चों ने बताया कि हमारे माता-पिता शादी का किस्सा लेकर हम बच्चों पर दबाव डाल रहे है। वे हमारा स्कूल में से नाम भी कटवाने के लिए तैयार हो गए हैं। हमारे माता-पिता बोलते हैं कि तुम लोग बड़े हो रहे हो अब तुम लोगों को घर की जिम्मेदारी समझनी चाहिए। आखिर हम लोग तुम्हारे साथ कब तक रहेंगे। इस वजह को लेकर हम बच्चे बहुत चिंतित हो रहे हैं कि अभी हम बच्चों के खेलने-कूदने की उम्र में हमारे माता-पिता शादी करने के लिए तैयार हो गए हैं और हम छोटी उम्र के बच्चों को अलग-अलग शहरो में काम करने के लिए भेज रहे हैं। अभी तक लगभग 5 बच्चों को दूसरे शहरों में काम की तलाश में भेज दिया है पर उन बच्चों का फोन आया, तो उन्होंने बताया कि हम बच्चों को काम ढूंढ़ना बहुत मुश्किल हो रहा है; क्योंकि हम बच्चे बहुत छोटे हैं। इसलिए कोई भी दुकानदार व कंम्पनी वाले बच्चों को काम पर नहीं रख रहे है। बच्चे अपने माता-पिता के दबाव की वजह से आर्ट एंड ग्राफ के कार्य में शामिल हो रहे हैं। कुछ बच्चों ने बताया कि हम बच्चों को कोई भी जल्दी काम पर नहीं रखता है। इसलिए हम बच्चे कागज-पेपर और कुछ अखबार से फूल गुलदस्ते बनाते हैं और उसे ही बेचकर जो भी पैसे होते है। वह अपने माता-पिता को देते है। 16 वर्षीय अक्सर ने बताया कि मैंने अपनी मम्मी को समझाया कि मैं तो अभी बहुत छोटा हूं। आप मेरी शादी क्यों कर रहे हो ? मम्मी ने बताया कि घर की देख-रेख करने के लिए कोई नहीं है, इसलिए तुम्हारी शादी कर रही हूं; ताकि शादी होने के बाद तुम और तुम्हारी पत्नी घर की जिम्मेदारी उठाओ और हम लोगों का ख्याल भी रखो। बच्चे ने अपनी मम्मी को समझाते हुए कहा कि मम्मी अगर आप मेरी छोटी उम्र में शादी कर दोगी, तो हम दोनों की जिंदगी खराब हो जाएगी और अभी तो हम बच्चों की उम्र पढ़ाई-लिखाई करने की है, लेकिन इन बच्चों की पुकार कोई नहीं सुन रहा है और छोटी उम्र में शादी और काम ही काम दिख रहा है।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों को पार्क में क्यों नहीं खेलने देते अच्छे घरों के बच्चे

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार ने पश्चिमी दिल्ली शकूरबस्ती में विजिट किया तो विजिट के दौरान पता चला कि शकूरबस्ती में एक बहुत अच्छा पार्क है। लेकिन उस पार्क में सड़क एवं कामकाजी बच्चे खेलने के लिए जाते हैं, तो बड़े घर के बच्चे उन्हें मारकर भगा देते हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि वह बड़े घर के बच्चे आप सभी बच्चों से इस प्रकार का भेद-भाव क्यों करते हैं ? 15 वर्षीय गोलू ने बताया कि भइया वह हम बच्चों के साथ भेद-भाव इसलिए करते हैं, क्योंकि हम बच्चों के कपड़े साफ सुथरे नहीं होते है। हमें देखते ही वह पार्क का मेन गेट बंद कर देते हैं, वह बोलते हैं कि तुम बच्चे बहुत गरीब हो अगर हम लोग तुम्हारे साथ खेलेंगे तो हमारे माता-पिता की क्या इज्जत रह जाएगी; और डांटकर भगा देते हैं। हम बच्चों को उस पार्क में जाने का बहुत मन करता है; क्योंकि उस पार्क में हर चीज की सुविधा है। उस पार्क में एक तरफ झूला व दूसरी तरफ हरी-भरी घास है। उस पार्क को देखकर हम बच्चों को बहुत अच्छा लगता है। 16 वर्षीय कमला ने बताया कि पहले हम बच्चे किसी दूसरी जगह पर रहते थे तो वहां पर इस तरह का कोई पार्क नही था। इसलिए हम बच्चों को खेलने में बहुत परेशानी होती थी। हमारे माता-पिता ने उस जगह से कमरा खाली कर दिया है और शकुरबस्ती में नया कमरा लिया है; ताकि हम बच्चे पढ़ाई के साथ-साथ खेल भी सकें। 17 वर्षीय राजा ने बताया कि हमारे माता-पिता बहुत मुश्किल से दो पैसे कमाते हैं, तभी हमारा गुजारा हो पाता है। अगर हम बच्चे इसी तरह लगातार घर बदलते रहेंगे तो बच्चे अपनी पढ़ाई कैसे पूरी करेंगे ? इसलिए बच्चे शकूरबस्ती में ही रहते हैं। रोज शाम को इस पार्क में खेलने के लिए जाते थे लेकिन कुछ दिनों से यह बड़े घर के बच्चे हम बच्चों को उस पार्क में खेलने नहीं देते हैं। इन बच्चों को देखकर हम बच्चों के मन में लालसा आती है कि इनकी तरह काश्खेल हम भी उस पार्क में खेल पाते। लेकिन हमें उस पार्क को देखकर अपना मन बहलाना पड़ता है। इसलिए बच्चे चोरी-टुपे पार्क की दीवार के ऊपर चढ़कर पार्क में जाते हैं। लेकिन एक दिन हमें दीवार पार करते हुए उन लोगों ने देख लिया, उस दिन के बाद से उन बच्चों ने अपने माता-पिता से बोलकर कांटे वाली तार से पूरे पार्क का घेरा लगवा दिया है, ताकि हम बच्चे उस पार्क में नहीं जा सकें। पर हम बच्चे अभी भी उम्मीद लगाए बैठे हैं कि एक दिन जरूर हम बच्चों को उस पार्क में खेलने का मौका मिलेगा।

पुल के नीचे रहने वाले बच्चों में भय

बालकनामा ब्यूरो

दक्षिणी दिल्ली में एक पुल के नीचे लगभग तीन सौ झुग्गी-झोपड़ी हैं और रेलगाड़ी की पटरियां इन झुग्गियों से होकर निकलती हैं। 15 वर्षीय शालू ने बताया कि भइया यहां पर आए दिन दुर्घटना होती रहती है; क्योंकि बहुत सारे बच्चों के माता-पिता अपने बच्चों को छोड़कर काम पर चले जाते हैं और फिर बच्चे पूरे दिन इधर से उधर खेलते रहते हैं। ज्यादातर बच्चे रेल की पटरी पर ही खेलते हैं। इस वजह से बच्चों के माता-पिता हमेशा भयभीत रहते हैं कि हमारे बच्चे अकेले पुल के नीचे रहते हैं। बच्चों के साथ रेल से कोई दुर्घटना न हो जाए; क्योंकि पुल से रेलगाड़ी काफी तेज रफ्तार से होकर निकलती है और कभी-कभी तो हॉर्न भी नहीं देती है। शायद यही कारण है कि यहां पुल के नीचे आए दिन हादसे होते रहते हैं। अभी हाल ही में एक व्यक्ति की रेलगाड़ी से दुर्घटना हो गई थी। यह देखकर बच्चों के अंदर बहुत डर समा गया है। जब बच्चे पटरियों पर दौड़ती रेल को देखते हैं तो बच्चो को अकेले रहने में या रात को पुल के नीचे सोते समय उन्हें घबराहट होती है। डर के मारे बच्चे रात को शौच करने के लिए भी बाहर नहीं निकलते हैं। पुल के नीचे रहने वाले बच्चे इन सभी समस्याओं से गुजर रहे हैं। बच्चों ने कहा कि हम अपनी पीड़ा किसी से भी नहीं कह सकते; क्योंकि हमें डर है कि अगर हमने अपना किसी के सामने मुंह खोला तो बच्चों के साथ-साथ पुल के नीचे रह-रहे सभी लोगों को भगा दिया जाएगा और अगर यहां से हमें भगा दिया गया, तो हम कहां जाएंगे; ऐसी दशा में, जबकि हमें दो वक्त की रोटी भी बहुत मुश्किल से नसीब होती है। इसलिए बच्चे चाहते हैं कि सरकार हम जैसे बच्चों के लिए सुरक्षित जगह पर एक रैन बसेरा बनवा दे ताकि हम बच्चे उस रैन बसेरे में सुरक्षित रह सकें, और रेल की पटरी पर हो रही दुर्घटना के भय से बचे रहें।

स्टेशन पर रहने वाले बच्चों ने बताई अपनी दशा

बालकनामा ब्यूरो

कड़कती धूप में स्टेशन पर रहने वाले बच्चे किस प्रकार अपना जीवन गुजार रहे है, इसकी छानबीन करने के लिए पत्रकार स्टेशन पहुंचा और मुलाकात की कुछ ऐसे बच्चों से जो हर वक्त नशे में लिप्त रहते हैं। बच्चों से पत्रकार ने कुछ सवाल-जबाव किए कि आजकल कड़ी गर्मी पड़ रही है। आप बच्चे यह नशा क्यों करते हो ? इतनी गर्मी में नशा करने से आपको कोई हानि भी पहुंच सकती है ? 17 वर्षीय (परिवर्तित नाम) गोपाल ने बताया कि हम बच्चे जो नशा कर रहे हैं, वह बहुत खतरनाक है। इस नशे के डिब्बे पर भी यह लिखा है कि इसे बच्चों से दूर रखना चाहिए; क्योंकि यह नशा इतना खतरनाक है कि अगर इस पर माचिस जलाएं तो फौरन आग लग जाती है। इस बार तो इतनी ज्यादा गर्मी पड़ रही है, ऐसे में इसका नशा करना बहुत खतरनाक है। पत्रकार; आप बच्चे जब इतना कुछ जानते ही हो फिर नशा क्यों करते हो ? 16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सलमान ने बताया कि हम बच्चों ने यह निर्णय लिया था कि हम गर्मी में नशा नहीं करेंगे; लेकिन स्टेशन पर बच्चे समूह बनाकर रहते है। जो बच्चों के समूह का लीडर होता है, वही बच्चों को नशा करने के लिए बोलता है। अगर बच्चे नशा छोड़ने की बात करते हैं, तो समूह का लीडर उस बच्चे को समूह से निकाल देता है। इसलिए हम बच्चे नशा नहीं छोड़ पा रहे हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा- कि आप समूह से अलग क्यों नहीं रह सकते हो ? 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सागर ने बताया कि अगर हम बच्चे अपने समूह में नहीं रहेंगे, तो दूसरे समूह के बच्चे हमें स्टेशन पर नहीं रहने देंगे; अथवा जो भी रेलगाड़ी आएगी उसमें हमें कबाड़ा भी नहीं बीनने देंगे। बच्चों ने बताया कि वे इस नशे की समस्या से जूझ रहे हैं और अपना पेट पालने के चक्कर में उन्हें नशा करना पड़ता है। स्टेशन पर रहने के लिए अपने समूह के लीडर की हर एक बात माननी पड़ती है, फिर चाहे उसमें हमारा भला हो या नुकसान। नशा करने की वजह से हमारा शरीर कमजोर हो रहा है। यह जानते हुए भी हमें नषा करना पड़ता है। लेकिन अगर स्टेशन से लीडर ने भगा दिया तो हर दिन भूखे पेट मरना पड़ेगा और अब तो बच्चे नशे में बुरी तरह फंस चुके हैं। एक बार को अगर हमें खाना नहीं मिलेगा तो उससे हमें फर्क नहीं पड़ेगा; लेकिन अगर हमें एक दिन नशा न मिले तो हमारी जैसे शरीर से जान ही निकल जाएगी; ऐसा लगता है। इसलिए हमारे लिए जितना जरूरी पेट पालना हो गया है, उतना ही जरूरी नशा करना भी हो गया है। इस कड़कती गर्मी में स्टेशन पर रहने वाले बच्चे ज्यादा बीमार हो रहे हैं।

घटना से ग्रस्त होकर बच्चे की हुई मौत

बालकनामा ब्यूरो

पश्चिमी दिल्ली में पत्रकार ने एक ऐसे स्थान पर विजिट किया जहां लगभग 1700 कच्ची झुग्गी-झोपड़ियां बनी हुई है। दुःख की बात यह है कि इन झुग्गियों में किसी प्रकार की सुविधा नहीं है। इन बच्चों के माता-पिता ने तिरपाल डालकर अपना घर बना रखा है। वह अपने पेट के गुजारे के लिए मजदूरी करते हैं। रिक्शा चलाकर दो पैसे कमाते हैं और अपने बच्चों को घर की देखभाल करने के लिए घर पर ही छोड़ जाते हैं। जब पुलिस वाले उनके इलाके में चक्कर लगाने के लिए जाते हैं, तो वह बच्चों के बने घर की तोड़-फोड़ कर देते है। इसी तरह पुलिस वाले आए दिन बच्चों को परेशान करते हैं। उनके तिरपाल चाकू और ब्लेड से काटकर चले जाते हैं। जब बच्चों के माता-पिता घर वापस लौटते हैं, तो वह खाना पकाने के बजाए अपने घर को फिर से सुधारते हैं। फिर से अपनी झुग्गी के लिए नया तिरपाल खरीदकर लाते हैं, फिर वह खाना बनाने में लगते हैं। कई बार तो पुलिस वाले जलते चूल्हे में पानी डाल देते हैं। बारिश के मौसम में तेज आंधी आने पर झुग्गी टूट जाती है तथा तेज बारिश होने की वजह से घरों में पानी भर जाता है, और उन्हें रात भर बारिश में भीगना पड़ता है। इस बस्ती में बिजली के तार बहुत कमजोर हो चुके हैं। बिजली के तार काफी हद तक नीचे की ओर ल हुए हैं वह इतने कमजोर हो चुके हैं कि तेज हवा चलने पर बिजली का एक तार टूटकर गिर भी चुका है, जिसकी वजह से 3 साल के बच्चे की मृत्यु हो चुकी है। यह घटना 28 मई की है। इस तेज बारिस के चलते बिजली का तार टूटकर रिक्शे पर गिर गया। आचानक खेलते-खेलते एक बच्चा रिक्शे के पास जा पहुंचा, जैसे ही उसने रिक्शे को टूआ तो तुरन्त उस बच्चे को बिजली ने पकड़ लिया और उसकी मौत हो गई।

पुलिस मांगती है बच्चों से हफ्ता

बालकनामा ब्यूरो

शकूरबस्ती में एक बहुत बड़ा बाजार लगता है, जिसे लोग बुध बाजार के नाम से जानते हैं। पता चला है कि उस बुध बाजार में कुछ माता-पिता और कुछ बच्चे अपने गुजारे के लिए सामान बेचने जाते हैं; जैसे- खिलौने कपड़े व छोटी-मोटी वस्तुएं आदि। इन बच्चों को पुलिस वाले बहुत परेशान करते हैं। बच्चों से हफ्ता मांगते हैं। इनमें से कुछ ही बच्चे ऐसे हैं, जो पुलिस को हफ्ता दे पाते हैं और जो बच्चे हफ्ता नहीं दे पाते हैं, उन बच्चों पर पुलिस अत्याचार करती है। 16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) आरती ने बताया कि भइया हमारा परिवार बहुत गरीब है। अगर हम बच्चे इस बाजार में सामान नहीं बेचेंगे तो हमारा गुजारा नहीं हो पाएगा। इस बाजार में हम बच्चे लॉरेन्स रोड से

सामान बेचने के लिए आते हैं और जो भी दो पैसा कमाते है उसी से हमारा घर चलता है। बच्चों ने बताया कि हम बच्चे बहुत मुश्किल से दुकान लगाते हैं; क्योंकि जब हम बच्चे बाजार में दुकान लगाने आते है, तो हमें कहीं भी दुकान लगाने के लिए जगह नहीं मिलती। लेकिन हम बच्चे सड़क का कूड़ा-करकट साफ करके सड़क के किनारे अपनी दुकान लगाते हैं। जब कोई पुलिस कर्मचारी बाजार में चक्कर लगाने आते हैं, तो उनकी नजर सबसे पहले हम बच्चों पर ही पड़ती है। हमें देखते ही वह हमें मार-मार कर भगाते हैं और हमारी दुकान वहां से हटवा देते हैं। जब हम बच्चे उनको कहते हैं कि सर अगर हम दुकान नही लगाएंगे, तो हमारे घर का गुजारा नहीं चलेगा। फिर भी वह नहीं सुनते हमें मारते-पीटते और डांटते हैं। पुलिस उनसे दुकान लगाने के लिए जब हफ्ता मांगती है, तो बच्चे उनसे कहते हैं कि सर हम बच्चे बहुत मुश्किल से सौ-दो सौ रूपये कमा पाते हैं। अगर आपको हफ्ता दे देंगे तो हमारे पास क्या बचेगा और हम अपने भाई-बहन की परवरिश कैसे करेंगे। तो पुलिस वाले भइया गुस्से से बच्चों से बोलते हैं कि मैंने तुम्हारे भाई-बहन को पालने का ठेका ले रखा है। अगर तुम लोगों को इस बाजार में सामान बेचना है, तो हफ्ता देना ही पड़ेगा। नहीं तो मैं सारा सामान दें क दूंगा। 17 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राहुल ने बताया कि कभी-कभी तो पुलिस वाले भइया हम बच्चों की दुकान के सामने बड़ी गाड़ी या रिक्शा खड़ा करवा देते हैं; ताकि हमारा सामान लोगों को न दिखे और न ही बिक पाए। जब रिक्शा खड़ा कर देते हैं तो हम बच्चे पुलिस वाले सर के जाने के बाद रिक्शा हटा देते हैं लेकिन बड़ी गाड़ी को हम बच्चे नहीं हटा सकते हैं। इसलिए हमारा सामान नहीं बिक पाता है। हम बच्चे यही चाहते है कि पुलिस वाले भइया हम बच्चों के साथ इस तरह का व्यवहार ना करें और हमारी परेशानियों को सुनें तभी हमारा परिवार खुशी से रह पाएगा ।

बोतल बीनने वाले बच्चों पर दुकानदारों का रूआब

बालकनामा ब्यूरो

पत्रकार ने रेलवे स्टेशन पर रहने वाले बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रूप मीटिंग की। मीटिंग के दौरान बच्चों ने बताया कि वह किस प्रकार एक-एक बोतल इकट्ठा करते है, फिर उन बोतलों की छटाई-बिनाई करके बच्चे कबाड़े की दुकान पर बेचते हैं, तब जाकर इन बच्चों का गुजारा होता है। लेकिन कबाड़े वाले दुकानदार बच्चों से फायदा उठाते हैं। बच्चों द्वारा जानकारी मिली कि एक बाजार है जिसका नाम गुप्त रखा गया है। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राहुल ने बताया कि वह रोज बोतल बीनकर उसी दुकानदार के पास बेचने जाता है लेकिन वह दुकानदार बोतल की सही कीमत नहीं देता है। वह अपनी मनमानी करता है। अभी बाजार में चालीस रूपये किलो के हिसाब से बोतल बिक रही है पर जहां जिस दुकानदार के पास यह बच्चे अपनी बोतल बेचते हैं वह उसके आधे रेट में उनसे बोतल खरीदता है। वह 20 रूपए किलो के हिसाब से बच्चों से बोतल खरीदता है। उसके बावजूद वह अपने तराजू से माल भी सही से नहीं तौलता है। उसमें भी घोटाला करता है और कुछ माल कम तौलता है। अगर बच्चे की पांच किलो बोतल होती हैं, तो वह उसे चार किलो ही बताता है। इस तरह वह दुकानदार बच्चों से बहुत पैसे कमा लेता है और बच्चों को बहुत नुकसान होता है। उन्हें बहुत कम पैसे मिलते हैं। जब बच्चों को पता चला कि वह बच्चों के साथ घोटाला करके पैसे कमाता है,

तो बच्चों ने इसका विरोध किया। विरोध करने पर उल्टा दुकानदार धमकी देने लगा कि अगर वह उसके पास बोतल नहीं बेचेंगे, तो वह बच्चों को स्टेशन पर काम करने नहीं देगा और वहां से भगा देगा। इस डर की वजह से बच्चे उससे अब कुछ नहीं बोलते हैं। वे खामोश रहते हैं और उसी दुकानदार को चुपचाप अपनी बोतल बेचते हैं। दुकानदार जैसा कहता है बच्चों को वैसा ही करना पड़ता है। बोतल बीनने वाले बच्चे चाहते हैं कि इस दुकानदार के खिलाफ जल्द से जल्द कोई कार्यवाही हो जिससे हमें हमारी मेहनत के सही पैसे मिल सकें और हमारी बोतल के सही दाम हमें मिलें। हमारे साथ घोटाला करके पैसे कमाने वालों के खिलाफ सख्त कार्यवाही जरूर होनी चाहिए ।

दुर्व्यवहार से परेशान पुल के नीचे रहने वाले बच्चे

बालकनामा ब्यूरो

गुजारे लायक वेतन/रोजगार नहीं होने के कारण कुछ परिवार पुल के नीचे रह रहे है; क्योंकि राजधानी दिल्ली में कमरे का किराया इतना ज्यादा है कि बच्चों के माता-पिता किराए पर कमरा ले ही नहीं सकते। जब हम बच्चे गांव में रहते थे, तब हमारे माता-पिता दूसरे के खेतों में काम करके अपना गुजारा करते थे। दो पैसे ज्यादा कमाने की लालच में हमारे माता-पिता हम बच्चों को दिल्ली लेकर आ गए। दिल्ली आने के बाद भी काम का कहीं कोई ठिकाना नहीं है। कभी काम मिलता है, तो कभी नहीं। इसलिए हमारे माता-पिता को सात-सात दिन बिना काम के ही बैठना पड़ता है। जब हमारे माता-पिता को कई-कई दिनों तक काम नहीं मिलता है, तो हम बच्चों को खाना भी नसीब नहीं होता है। बच्चों को भूखे पेट ही रहना पड़ता है। ऐसी स्थिति में हमारे माता-पिता एक कमरा किराए पर कहां से ले पाएंगे। वर्तमान में हम बच्चे पुल के नीचे रह रहे है। यहां पर सबसे ज्यादा कुछ पुलिस वाले भइया परेशान करते हैं। जब हम बच्चे आधी रात को नींद में सोए हुए होते हैं, तो पुलिस वाले भइया डंडा मारकर उठा देते हैं, कई बार तो दिन में जब मम्मी खाना बना रही होती है, तो खाने में लात मारकर सारा खाना दें क देते हैं। माता-पिता जब इन पुलिस वाले भइया से बात करते हैं और कहते हैं कि हम अपनी मजबूरी में यहां पर रहते हैं। हम लोगों को आप इस तरह से परेशान मत किया करो। तो पुलिस वाले भइया उनके साथ गाली-गलौज से बात करने लगते है। पत्रकार ने बच्चों को सलाह देते हुए कहा कि यहां पर तीन रैन बसेरे हैं। आप लोग उन रैन बसेरों में क्यों नहीं रहते हो ? 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) मनीष ने बताया कि उन रैन बसेरों में रहने वाले लोगों की संख्या बहुत अधिक है, इसलिए हमारे माता-पिता उन रैन बसेरों में नहीं रहना चाहते हैं; क्योंकि जो व्यक्ति रैन बसेरे में पहले से रह रहे हैं, उन्हीं लोगों के रहने के लिए जगह नहीं हो पाती है, तो हम लोग उन रैन बसेरों में कैसे रह सकते हैं। इसलिए हम बच्चे चाहते हैं कि जिस तरह सरकार ने रैन बसेरे बना दिये हैं। वैसे ही बच्चों के लिए स्पेशल एक और रैन बेसेरा बना दें, ताकि हम बच्चों को पुलिस का आत्याचार नहीं सहना पड़े।

शेल्टर होम के कार्यकर्ता बनें बच्चों के प्रति संवेदनशील

बालकनामा ब्यूरो

हर स्टेशन पर रहने वाले बच्चे के लिए सुरक्षित घर शेल्टर होम होता है। बच्चे शेल्टर होम में इसलिए जाते हैं, ताकि वह अपनी स्टेशन की जिंद्गी से टुटकारा पा सकें, और वहां पर पढ़ाई-लिखाई कर सकें। लेकिन बच्चों ने बताया कि ऐसा बिल्कुल नहीं किया जाता है। जो भी बच्चा शेल्टर होम में रहने के लिए जाता है, उन बच्चों के साथ बहुत अत्याचार होता है। हाल ही में एक बच्चा शेल्टर होम से भागकर दोबारा स्टेशन पर आ गया। जब पत्रकार ने उस बच्चे से पूछा कि आप फिर से स्टेशन पर क्यों आ गए हो ? आपको कितना समझाया था कि आपके लिए शेल्टर होम ही सुरक्षित स्थान है। बच्चे ने रोते हुए कहा कि भइया हां मैं आपकी बात मांनता हूं कि हम बच्चों के लिए शेल्टर होम अच्छी जगह है, पर जो शेल्टर होम के अंदर होता है, वह आपको नहीं पता। जो बच्चे शेल्टर होम के अंदर रहते हैं, उन्हीं बच्चों से शेल्टर होम कार्यकर्ता जबरन काम करवाते हैं। अगर वह बच्चे काम नहीं करते तो बुरी तरह से उनकी पिटाई करते है। क्या आप ऐसी जगह को सुरक्षित स्थान मानते हो ? अगर कोई बच्चा भागने की कोशिश करता है तो उसको बिजली के झटके देने के लिए धमकाया जाता है; ताकि वह बच्चा शेल्टर होम से भागने की कोशिश न करे। जिस वक्त बिजली का झटका देने के लिए बच्चों को धमकाया जाता है, तो बच्चे यह सुनकर बहुत डर जाते हैं। वह रोते रहते हैं, डर के मारे किसी से भी अपना दुःख-दर्द नहीं कह पाते हैं। वहां उन्हें बहुत अकेलापन महसूस होता है। कोई भी व्यक्ति शेल्टर होम में अपने जैसा नहीं लगता है। शेल्टर होम के कार्यकर्ताओं का स्वभाव बच्चों के प्रति बिल्कुल भी संवेदनशील नहीं है। वह हमेशा बच्चों के साथ गाली-गलौज करके ही पेश आते हैं। कोई भी वहां प्यार से बात नहीं करता है। कुछ बच्चे तो षेल्टर होम में ऐसे है जो रोते-रोते सो जाते हैं और उनसे कोई उनकी समस्या के बारे में भी नहीं पूछता है। शेल्टर होम में बच्चों को सही से खाना भी नहीं मिलता। इसलिए बच्चे शेल्टर होम के कार्यकर्ताओं के दुर्व्यवहार की वजह से भागकर स्टेशन पर आ जाते हैं। शेल्टर होम के लिए बच्चों ने अपने कुछ सुझाव भी रखे कि जिस तरह का बच्चों के साथ शेल्टर होम में दुर्व्यवहार किया जाता है वैसे न किया जाए और बच्चों का अच्छे से पालन-पोषण किया जाए। उनसे प्यार से बात की जानी चाहिए। हर एक कार्यकर्ता का व्यवहार उनके प्रति बहुत ही संवेदनशील हो। उसके बाद ही शेल्टर होम में रहने वाले बच्चों का भविष्य उज्जवल हो पाएगा ।

बढ़ते कदम के ग्रुप लीडर ने दिखाई बहादुरी

चाइल्ड लाइन टीम से ली मदद

बातूनी रिपोर्टर अर्चना व रिपोर्टर विजय कुमार

रामस्वरूप खेड़ा में सपोर्ट ग्रुप मीटिंग का आयोजन किया गया, जिसमें बीस बच्चों ने भाग लिया। मीटिंग की शूरूआत में ग्रुप लीडर अर्चना ने सभी बच्चों का स्वागत किया और नाम परिचय करवाया। साथ ही साथ सभी बच्चों ने अपनी-अपनी समस्याओं के बारे में बताया। 11 वर्षीय आरती ने बताया कि यहां शाम को एक बड़ा लड़का मंदिर के पास से आता है। हम बच्चों से गंदी-गंदी बात बोलता है। जब हमारे माता-पिता काम पर चले जाते हैं, तब वह लड़का हमें घूरता है और अश्लील बातें बोलता है। इस बात से ग्रुप लीडर अर्चना भी सहमत थीं। क्योंकि यह बात बिल्कुल सही है, जब एक दिन उस लड़के ने अर्चना को अकेले देखा तो अर्चना का हाथ पकड़ लिया और जबरन गली के अंदर खींचने लगा। अर्चना जोर से चीखी, तो वह लड़का वहां से भाग गया। अर्चना ने जब माता-पिता को बताया, तो उन्होंने बात सुनी, पर कोई उसके खिलाफ अवाज नहीं उठायी। इस समस्या को देखते हुए बढ़ते कदम के सदस्यों द्वारा चाइल्ड हेल्प लाइन नम्बर 1098 पर फोन करके अपनी समस्या को बताया और जब चाइल्ड हेल्प लाइन के कार्यकर्ता आए, फिर उन्होंने बच्चों से मुलाकात की और उनकी समस्या सुनी। बच्चों की समस्या सुनने के बाद चाइल्ड लाइन के कार्यकर्ता ने उनकी मदद की। उस दिन के बाद से ही उस लड़के का वहां आना-जाना बंद हो गया। अब वहां के बच्चे सुरक्षित हैं।

स्टेशन कार्यकर्ता करते हैं स्टेशन पर रहने वाले बच्चों पर अत्याचार

बालकनामा ब्यूरो

आगरा कैंट रेलवे स्टेशन पर रहने वाले बच्चों के साथ पत्रकार ने मीटिंग का आयोजन किया। मीटिंग के दौरान बच्चों ने अपनी परेशानी पत्रकार के सामने रखते हुए कहा कि वर्तमान में बहुत गर्मी पड़ रही है और हम बच्चे गर्मी से बचने के लिए स्टेशन पर आ जाते हैं, तो स्टेशन के कार्यकर्ता हम बच्चों पर अत्याचार करते हैं; जैसे ही हम बच्चे स्टेशन पर बने प्रतीक्षालय के कमरों में पंखे के नीचे बैठने जाते हैं, तो हम बच्चों को पुलिस अधिकारी डंडों से मारते है। कुछ बच्चों ने बताया कि स्टेशन पर ठन्डे पानी की मशीन लगी हुई हैं। वहां से पब्लिक और कुछ झुग्गी के लोग पानी भरते हैं, पर उन्हें तो पुलिस पानी भरने

और पीने के लिए मना नहीं करती, पर जैसे ही हम बच्चे वहां ठंडा पानी-पीने के लिए जाते हैं, तो पब्लिक व पुलिस वाले भइया हमें मारने दौड़ते हैं। स्टेशन पर पानी की सुविधा बहुत है लेकिन हम बच्चे बूंद-बूंद पानी के लिए तरसते हैं। इतनी गर्मी पड़ रही है कि हम बच्चों को नहाने का मन करता है। नहाना तो दूर की बात है, वह हमें पानी भी नहीं पीने देते हैं। पानी की किल्लत की वजह से हम बच्चे कई-कई दिनों तक नहीं नहाते हैं। इस वजह से हमारे शरीर में बहुत गंद्गी हो गई है। उस गंद्गी की वजह से हमारे शरीर में खुजली हो गई है। और खुजलाने से शरीर में बड़े-बड़े जख्म भी हो गए हैं। हमारे पास इतने पैसे नहीं हैं कि हम प्राइवेट शौचालय में जाकर नहा सकें। हमारे पास जो भी पैसे होते हैं, वह भी स्टेशन पर काम करने वाले कार्यकर्ता छीन लेते हैं; इसलिए हम बच्चे चाहते हैं कि स्टेशन कार्यकर्ता स्टेशन पर रहने वाले हम बच्चों के साथ ऐसा व्यवहार/अत्याचार ना करें; क्योंकि हम बच्चे भी अपनी मजबूरी में ही स्टेशन पर रहते हैं। दो पैसे कमाकर अपना पेट पालते हैं।

आखिर हमारे साथ ऐसा क्यों ?

बातूनी रिपोर्टर रंजीत व रिपोर्टर शम्भू

अक्सर लोग सड़क एवं कामकाजी बच्चों को अनदेखा करते हैं। हमारे समाज में इन बच्चों के हितों के लिए कोई कुछ नहीं करते हैं। अगर यह बच्चे कहीं पर कबाड़ा बीनते या भीख मांगते दिख जाते हैं तो लोग बोलते हैं कि इनका रोज का पेशा है। इसके अलावा यह बच्चे और कुछ काम कर ही नहीं सकते। कुछ बच्चे स्टेशन पर अपना गुजर-बसर करते हैं। इन बच्चों को आये दिन टिकट चेकर व कुछ पुलिस अधिकारी हर वक्त परेशान करते हैं। इन बच्चों को कबाड़ा बीनने के लिए रेलगाड़ी में चढ़ने नहीं दिया जाता है। क्योंकि पुलिस अधिकारी इन बच्चों को गलत समझते हैं। उनको यह लगता है कि यह बच्चे रेलगाड़ी में कबाड़ा बीनने के लिए नहीं, बल्कि लोगों की जेब और पब्लिक का सामान चोरी करने के लिए जाते हैं; जबकि ये बच्चे ऐसा नहीं करते है। वह अपना पेट पालने के लिए कबाड़ा बीनते है। बेशक यह बच्चे गंदे कपड़ों में रहते हैं, पर इनके मन में बिल्कुल लालच नहीं है। बच्चे सिर्फ अपने काम से मतलब रखते हैं। जैसे ही इनको बोतल मिलती है, तो उसी वक्त बोतल लेकर रेलगाड़ी के डिब्बों से बाहर निकल जाते हैं और उसे बेचकर गुजारा करते हैं। अगर कोई व्यक्ति या नया बच्चा मुसीबत में दिखाई देता है, तो यह बच्चे उनकी उसी वक्त मदद करते हैं। 17 वर्षीय परिवर्तित नाम (राजा) ने बताया कि भइया हम बच्चे कबाड़ा बेचकर अपने कपड़े लेने के लिए बाजार जा रहे थे। तभी हमने देखा कि एक व्यक्ति शराब पीकर स्टेशन की पटरी की ओर चल रहा था। लेकिन नशे से धुत उसे रेलगाड़ी की आवाज भी सुनाई नहीं दे रही थी। यह देखते हुए बच्चों ने उस व्यक्ति का हाथ पकड़कर अपनी ओर खींच लिया और उसकी जान बचा ली लेकिन जब बच्चों ने उस व्यक्ति को उसकी जान बचाने के लिए जोर से खींचा, तो वह व्यक्ति दूसरी पटरी पर जा गिरा और वह जख्मी हो गया; फिर बच्चे उस व्यक्ति को अस्पताल ले गए और उसका अपने पैसों से इलाज कराया। इतना ही नहीं अगर स्टेशन पर किसी व्यक्ति का सामान भी टूट जाता है, तो हम बच्चे जी.आर.पी.थाने में जमा करा देते हैं; ताकि उस व्यक्ति का सामान वापस मिल जाए और रेलवे स्टेशन पर जो भी कार्यकर्ता काम करता है उनकी भी समय-समय पर बच्चे मदद करते रहते हैं। जब स्टेशन कार्यकर्ता ठेले पर सामान पार्सल की ओर ले जाते हैं, जब रास्ते में चढ़ाई आती है, तो उन्हे ऊपर ले जाने में बहुत परेशानी होती है। तब बच्चे ठेले को धक्का लगाने में उनकी मदद करते है। फिर भी लोगों का नजरिया बच्चों के प्रति ठीक नहीं है। वे सोंचते है कि स्टेशन पर रहने वाले बच्चे अच्छा काम नहीं करते है, वह बुरी संगत में ही रहते हैं और उन्हें घृणा की नजरों से देखते हैं।

राहुल कर रहा है अपने भाई-बहनों का पालन पोषण

बातूनी रिपोर्टर राहुल व रिपोर्टर दीपक

माता-पिता के दुर्व्यवहार की वजह से कुछ बच्चे अपने घर को त्यागने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। ऐसे ही एक कहानी हैं 11 वर्षीय राहुल की। दो साल पहले राहुल अपने परिवार के साथ अजमेरी गेट में रहता था लेकिन पिता की मृत्यु होने के बाद राहुल की मम्मी ने अपने परिवार की देख-रेख करने के लिए दूसरी शादी कर ली; ताकि वह अपने बच्चों की सही तरह से परवरिश कर सके। लेकिन उनको क्या पता था कि जिस व्यक्ति से वह शादी करने जा रही हैं, वही व्यक्ति कुछ महीनों के बाद नशा करने लगेगा और उनके बच्चों के साथ अत्याचार करेगा। राहुल ने बताया कि मेरे पहले पापा बहुत अच्टे थे। हम 6 भाई-बहनों से बहुत प्यार करते थे। घर का खर्चा चलाने के लिए कढ़ाई का का करते थे। घर की परेशानी को लेकर वह हमेशा चिंतित रहते थे। इसी वजह से काफी बीमार भी पड़ गए। कुछ ही महीनों के बाद उनकी मृत्यु हो गई और घर की जिम्मेदारी मेरी मम्मी पर आ गई। इसलिए मम्मी ने दूसरी शादी कर ली। मेरे सौतेले पापा रिक्शा चलाने का काम करते हैं और जो भी पैसे कमाते हैं, उनको शराब पीकर उड़ा देते हैं। उन्हें हमारे परिवार से कोई लेना-देना नहीं है। वे कभी नहीं जानना चाहते कि हम बच्चों ने खाना खाया या नहीं। हम बच्चों को किसी भी प्रकार की परेशानी भी होती

है, तो वह अनदेखा कर देते हैं। जब हमारी मम्मी ने उनसे पूछा कि आप इतनी शराब क्यों पीते हो ? तो मेरी मम्मी को मारने लगे और गाली-गलौज से बात करने लगे कि मैंने तुम्हारे बच्चों को पालने का ठेका नहीं ले रखा है। वह बोलते है कि मुझे क्या पता था कि शादी के बाद इन बच्चों के साथ रहना पड़ेगा। मुझे तो लग रहा था कि शादी के बाद हम दोनों इन बच्चों को छोड़कर अलग रहने लगेंगे। इसलिए मैंने तुम से शादी की थी। कभी-कभी मेरे सौतेले पापा गुस्से में आकर हम बच्चों को मारने लगते हैं। इस रोज-रोज के लड़ाई-झगड़े की वजह से राहुल ने स्कूल भी जाना बंद कर दिया और घर से भागकर स्टेशन पर आ गया। स्टेशन पर आते ही उसके कुछ दोस्त भी बन गए। उनकी कहानी भी उसके जैसी ही है। उनके साथ भी इसी तरह का व्यवहार होता था। घरों की इस समस्या से परेशान होकर वे भी अपने घरों से भागकर स्टेशन पर आ गए। राहुल ने बताया कि वह स्टेशन पर अपना पेट पालने के लिए कबाड़ा बीनता है, तब जाकर दो वक्त का खाना खाता है। लेकिन वह अभी भी अपने घर जाता है। वह पूरे दिन स्टेशन पर ही रहता हैं और शाम होते ही बस पकड़ कर घर चला जाता है। जो भी उसके पास पैसे होते हैं उन पैसों से वह अपने भाई-बहनों के लिए खाने-पीने का सामान खरीदकर ले जाता है; ताकि वह लोग रात को भूखे ना रहें। इसी तरह वह अपने भाई-बहनों का पालन पोषण कर रहा है।

कैसे बनेगी हम बच्चों की जिंदगी

जब गुरू का व्यवहार इस प्रकार है

बालकनामा ब्यूरो

दिल्ली के कुछ सरकारी स्कूलो में पाया गया कि पहली कक्षा से लेकर पांचवी कक्षा तक के छात्रों को सही तरीके से पढ़ाया नहीं जा रहा है। अध्यापक अपने में ही मगन होकर रहते हैं। 8 वर्षीय परिवर्तित नाम (राहुल) ने बताया कि भइया हमारी कक्षा में अध्यापक हमेशा बच्चों को डांटते रहते हैं; क्योंकि हमारे अध्यापक ब्लैक बोर्ड पर एक बार काम लिखकर चले जाते हैं और जब हमें समझ नहीं आता है, तब हम बच्चे अध्यापक से पूछने जाते हैं कि ब्लैक बोर्ड पर क्या लिखा है? वह हमारी समझ में नही आ रहा है। तो हमारे अध्यापक बहुत क्रोधित होकर कहते हैं कि एक बार समझाने से समझ में नहीं आ रहा है। यह कहकर कक्षा में वापस भेज देते हैं और अध्यापिका के साथ गप्पें मारने लगते है। जब टुट्टी का समय होता है, तब ब्लैक बोर्ड पर होमवर्क लिख देते हैं। बच्चों ने बताया कि जो हमें पढाया जाता है, वह समझ में नहीं आता है। जब हम घर पर अपने माता-पिता से सवाल का जबाव पूछते है, तो वह भी हमें डांटते हैं। वे कहते है कि आप स्कूल में क्या करने जाते हो। जो तुम घर पर आकर हमसे पूछते हो। हम बच्चे जब बताते हैं कि स्कूल के अध्यापक सही से पढ़ाई नही करवाते हैं, तो वे हमारी बातों पर विश्वास नहीं करते है। जब बच्चे अध्यापक से कुछ पूछने के लिए जाते हैं, तो वह नहीं बताते हैं। इसलिए हमने अलग से अपने माता-पिता से कहकर कोचिंग सेंटर में दाखिला करा लिया है; ताकि हम बच्चे अच्टे से पढ़ाई-लिखाई कर सकें। हमारे कोचिंग सेंटर की अध्यापिका भी गुस्सा होती हैं और हम से कहती है कि जब तुम्हें पढ़ना-लिखना नहीं आता है तो इतना मुश्किल काम तुम्हारे अध्यापक कैसे देते हैं ? तुम बच्चे कुछ बोलते नहीं हो ? बच्चों ने बताया कि हम बच्चे उन से जब कुछ बोलना चाहते हैं, तो वह गुस्सा होते हैं। इसी डर से हम कुछ नहीं बोलते हैं। जैसा अध्यापक बोलते हैं, हम बच्चे वैसा ही करते हैं। हम बच्चों का यह कहना है कि जैसे सरकार ने कहा है कि शिक्षा हर बच्चे के लिए एक सामान है, इसमें अमीरी-गरीबी नहीं देखी जाती है, तो हम बच्चों के साथ इस तरह का व्यवहार क्यों ? हमारे माता-पिता बहुत मुश्किल से हम बच्चों का स्कूल में दाखिला करवाते हैं; ताकि हम बच्चे पढ़ाई-लिखाई करके अपनी जिंद्गी बना सकें। हमारे माता-पिता चाहते हैं कि जिस प्रकार वे बेरोजगार व अशिक्षित हैं, वैसे हम बच्चे भी बेरोजगार व अशिक्षित ना रहें।

अपनों से आखिर कैसे बचाया जाए अपना बचपन

बातूनी रिपोर्टर साहरन व रिपोर्टर दीपक

11 वर्षीय साहरन अपने माता-पिता के साथ बिहार में हसी-खुशी अपनी जिंद्गी गुजार रहा था। कुछ साल के बाद उसकी बड़ी बहन की शादी होने के बाद उसके माता-पिता ने उसको जीजा और दीदी के साथ दिल्ली भेज दिया; ताकि साहरन दो पैसे कमा सके और जो अपनी बहन की शादी में कर्ज लिया था, उसे चुका सके। पैसे कमाने की लालच से उसने अपनी पढ़ाई-लिखाई भी छोड़ दी और दिल्ली में आकर तरह-तरह के कामों में लिप्त हो गया। साहरन से पत्रकार की मुलाकात कुछ इस तरह हुई कि साहरन कड़ी धूप में अपने ठेले पर काफी सारा खीरा लादकर बेच रहा था। खीरा इतना लादा हुआ था कि उससे धक्का भी नहीं लग रहा था। पत्रकार ने साहरन से पूछा कि आप यह काम क्यों कर रहे हो ? साहरन ने बताया कि भइया मैं मजबूरी में यह काम कर रहा हूं। मेरे माता-पिता बुजुर्ग हैं, उनसे कुछ काम नहीं हो पाता है। इसलिए मैं खीरा बेचने का काम करता हूं। साथ ही बताया कि उसे खीरा बेचते वक्त क्या-क्या कठिनाईयां आती हैं ? जैसे कि किसी भी बाजार में अपना ठेला लेकर जाता है, तो पुलिस वाले मारने लगते हैं। दुकानदार भी परेशान करते हैं; और कहते हैं कि अपना ठेला मेरी दुकान के सामने से हटाओं। कभी-कभी तो ठेला भी पलट देते हैं। इसलिए खीरा नहीं बिक पाता है। ज्यादा दिन तक रखने पर खीरा खराब होने लगता है और मजबूरन हमें दें कना पड़ता है। पत्रकार ने पूछा; फिर भी कुछ तो कमाई होती होगी या नही ? साहरन ने बताया कि पूरे दिन कड़ी मेहनत करने के बाद सौ-दो सौ रूपये तक कमाई हो जाती है लेकिन सारे पैसे मैं अपने जीजा और दीदी को दे देता हूं; ताकि वह इन पैसे को मेरे माता-पिता तक पहुंचा सकें। लेकिन मुझे नहीं लगता है कि यह पैसा मेरे माता-पिता तक पहुंचता होगा; क्योंकि जब भी मै अपने माता-पिता से फोन पर बात करना चाहता हूं, तो वह मुझे बात नहीं करने देते हैं। मेरे जीजा और दीदी दोनों बोलते हैं कि गांव में फोन नहीं लग रहा हैं। मेरी माता-पिता से फोन पर बात नहीं होती है। इसलिए मुझे हर वक्त यह चिंता रहती है कि मेरे माता-पिता किस हाल में होंगे। मुझे दिल्ली में काम करते एक साल से भी ज्यादा हो गया है। मुझे वह कभी गांव भी नहीं जाने देते। जब मैं रात को सात-आठ बजे घर पहुंचता हूं तो मेरी दीदी अपने घर का भी काम करने के लिए बोलती है। मुझे ऐसा लगता है कि मेरे लिए इस दुनियां में कोई भी नहीं है सिर्फ मैं अकेला हूं।

समस्या से ग्रस्त होकर पढ़ाई कर रहा है कुलदीप

बातूनी रिपोर्टर कुलदीप व रिपोर्टर चेतन

10 साल की उम्र से ही कुलदीप ने अपने घर की आर्थिक स्थिति को सुधारा है और अपने घर की जिम्मेदारियों को पूरा किया है। सन् 2011 में जब कुलदीप एक फैक्ट्री में काम करता था तब पूरे बारह घंटे तक काम करने पर उसे सौ रूपये मिला करते थे। कुलदीप के पापा का देहांत हार्ट अटैक से हुआ था। कुलदीप के पापा का देहांत होने के बाद कोई भी कमाने वाला नहीं था; क्योंकि कुलदीप के सारे भाई-बहन की शादी हो गई थी। वह सभी अलग-अलग रहते हैं। कोई भी कुलदीप की मदद नहीं करता है। उसकी मम्मी बीमार रहती हैं। उनके लिए दवाई गोली और खाने-पीने के खर्चे का बोझ कुलदीप के कंधों पर आ गया है, इसलिए कुलदीप जी-तोड़ मेहनत करता है फैक्ट्री में आठ घंटे काम करता है। वह फैक्ट्री में 290 रूपये प्रतिदिन के हिसाब से काम करता है। हर एक महीने में कुलदीप को पैसे मिलते हैं लेकिन वह अपना घर का खर्चा चलाने के लिए हर रविवार को एडवांस 500 रूपये ले लेता है। उन्हीं पैसों से वह हफ्ते भर का गुजारा करता है; पर अब कुलदीप काम पर नहीं चल जा रहा है; क्योंकि एक रोज वह काम पर जा रहा था, तब उसका पैर जमीन पर फिसल गया। वह जोर से गिर पड़ा और उसके हाथ में फ्रैक्चर हो गया। अब कुलदीप के घर की स्थिति और बिगड़ गई है; क्योंकि उसके घर का खर्च नहीं चल पा रहा है। कुलदीप ने बताया कि जो मैंने अपनी मम्मी के लिए कुछ पैसे जमा किए थे। उसी पैसे से अभी घर का खर्चा चल रहा है लेकिन यह पैसे कब तक चलेंगे एक समय तो खत्म हो जाऐंगे, तब घर का खर्चा कैसे चलेगा। घर में चल रही समस्या के रहते हुए भी कुलदीप को पढ़ाई करने की बहुत लगन है। वह चाहता है कि दूसरे बच्चों की तरह वह भी स्कूल में जाकर पढ़ाई करे। इसलिए उसने घर के हालात को देखते हुए अपना दाखिला ओपन बेसिक एजुकेशन से तीसरी कक्षा में दाखिला ले लिया है।

जावेद की मदद से दो बच्चों की बची जिंदगी

बातूनी रिपोर्टर जावेद व रिपोर्टर शम्भू

16 वर्षीय जावेद अपने परिवार के साथ सराय काले खां में रहता है। बालकनामा अखबार का बातूनी रिपोर्टर भी है। जावेद अपने इर्द-गिर्द हमेशा ध्यान रखता है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चे किस प्रकार रह रहे हैं। जैसे कुछ बच्चे रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं, तो उन बच्चों से मिलता है। उन बच्चों से बातचीत करता है कि कहीं वह बच्चे किसी संकट से तो नहीं जूझ रहे है; क्योंकि जावेद ने सड़क की जिंद्गी बेहद करीब से देखी है। कुछ साल पहले जावेद भी रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा बीनने के लिए जाता था । वह पहले नशा करता था लेकिन बालकनामा अखबार के सहयोग से अब नशा नही करता है और कबाड़ा भी बीनने नहीं जाता है। क्योंकि जावेद को ओपन बेसिक एजुकेशन से तीसरी कक्षा में दाखिला मिल चुका है भूतकाल में जावेद की पारिवारिक स्थिति भी बहुत खराब थी। जावेद के परिवार वाले भी जावेद से घृणा करते थे। जावेद से गाली-गलौज करते थे। अपने घर में रखना भी नहीं चाहते थे; क्योंकि जावेद हर वक्त नशे में

लिप्त रहता था। लेकिन जैसे ही जावेद बालकनामा अखबार से जुड़ा और जावेद को बताया गया कि यह एक सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार है, जो हम बच्चे इस अखबार के रिपोर्टर बनते है और अखबार में रिपोर्टर बनने के लिए पढ़ाई करना बहुत जरूरी है और उस अखबार से जुड़ने के लिए नशा आदि छोड़ना पड़ता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए जावेद ने अपना नशा करना कम कर दिया और पढ़ाई की ओर जोर डालने लगा। वर्तमान में वह बिल्कुल नशा नहीं करता है। इसी वजह से जावेद के माता-पिता ने परिवार में जगह दे दी है। अब जावेद अपने परिवार के साथ हंसी-खुशी रहता है। कुछ ही दिनों की बात है जावेद अपने दोस्त के घर से स्टेशन को लौट रहा था, तभी अचानक जावेद का ध्यान दो बच्चों की ओर गया। वह दोनों बच्चे प्लेटफार्म पर रो रहे थे। तभी जावेद उन बच्चों के पास गया और उन बच्चों से बात करने की कोशिश की; पर उन बच्चों ने कुछ नहीं बताया। सिर्फ रो रहे थे। यह देखते हुए जावेद ने स्टेशन के पास कार्य करने वाले चाइल्ड हेल्प लाईन कार्यकर्ता को बुलाया और पूरी तरह जानकारी दी कि ये दोनों बच्चे यहां पर अकेले हैं। आप इन बच्चों की मदद कीजिए। उसके अगले दिन ही चाइल्ड हेल्प लाइन कार्यकर्ता ने इन दोनों बच्चों को सी डब्ल्यू सी में पेश किया और माता-पिता को खोजना शूरू किया और 10 दिन के बाद उन बच्चों को उनके माता-पिता को शौंप दिया गया। अब वह बच्चे सुरक्षित हैं।

छोटे से प्रयास से तीन बच्चे पहुंचे स्कूल

बातूनी रिपोर्टर अमन व रिपोर्टर चेतन

12 वर्षीय अमन अपने परिवार के साथ शकूरबस्ती में रहता है और पांचवी कक्षा में पढ़ाई करता है। अमन बहुत दयालू है। वह अपने आस-पास रहने वाले बच्चों की मदद करता है। अगर कोई व्यक्ति या बच्चा उसे समस्या में दिखाई देता है, तो वह उसकी मदद करता है। अमन ने कुछ महीने पहले ही एक बूढ़े व्यक्ति की मदद की थी, जो शराब पीकर रेलगाड़ी की पटरी की ओर बढ़ रहा था। उसकी ओर तेजी से बढ़ रही रेलगाड़ी देखते हुए अमन ने उस बूढ़े व्यक्ति को जोर से धक्का देकर उसकी जान बचा ली। इसके अलावा उसने अभी हाल ही में तीन बच्चों को सरकारी स्कूल में भी दाखिला दिलाया है। इन तीनों बच्चों ने अमन को देखकर कर ही स्कूल जाने का निर्णय लिया; क्योंकि यह तीनों बच्चे अमन को रोज सुबह स्कूल

जाते हुए देखते थे। इसी वजह से इन बच्चों के अंदर भी पढ़ाई की लालसा जागी। एक दिन अमन अपने स्कूल से पढ़ाई करके घर लौट रहा था, तभी तीनों बच्चे अमन के पास गए। उन्होंने कहा कि भइया मुझे भी आपकी तरह स्कूल जाना है। अमन ने उन बच्चों से नाम, पता पूछा और कहा कि आप मुझे अपने माता-पिता से मिलवा दीजिए। माता-पिता से मिलने के बाद अमन तीनों बच्चों के माता-पिता को लेकर श्री नगर के निकट सरकारी स्कूल में गया और उपप्रधानाचार्य जी से बात की, तो उपप्रधानाचार्य जी ने अमन से बहुत इज्जत से बात की और बैठने के लिए कहा, तभी बच्चों के दाखिले के बारे में चर्चा हुई और उपप्रधानाचार्य जी ने इन तीनों बच्चों को अपने स्कूल में दाखिला दे दिया। वर्तमान में यह तीनों बच्चे रोज स्कूल जाते हैं और स्कूल की टुट्टियों में तीनों बच्चे अपने घर में पढ़ाई करते हैं।

बालकनामा और बढ़ते कदम सुर्खियों में

हम आपके साथ इन पलों से जुड़ी कुछ तस्वीरें शेयर कर रहे हैं...

बढ़ते कदम के सदस्यों के साथ माननीय श्रीमती स्वाति सिंह जी

पुलिस वाले भईया कि सहयोग से हुई सड़क एवं कामकाजी बच्चों का आंखों की जांच

सन 2012 कि विनर इंडिया गोस्ट टाइलैंट की सोनिया बालकनामा टीम के साथ हेतु

स्कूल में बढ़ते कदम की सदस्य चाइल्ड हेल्प लाईन नम्बर की जानकारी देते हुए

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष मनोज तिवारी बालकनामा के काम की सराहना और रिपोर्टर के साथ स्ट्रीट चिल्ड्रन के हालात पर विचार विमर्श करते हुए

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471